

बहुदमियापद्धति

1.337

ASIAN ARCHIVES



पालाय १ ॥ दकवाङ् ॥ **ॐ ईं याँ** शानि ह्या २ ॥ वामजानू ॥ **ॐ ईं सँ** नल
स्ये २ ॥ दकजानू ॥ **ॐ ईं पँ** पत्रमात्मने २ ॥ हर्मो स्वद्वदयनमस्तकारं क
त्या ॥ **पूऊनं** ॥ अखधुमधुलाकालं ह्यादि ॥ ॥ यः अकज्रासनग ॥
पद्मात्तायपाइकां ॥ क्रुमान्नाय ३ ॥ ॥ **मूल** अमुयरुटदिग्वन्ध
नं ॥ **ॐ ईं यँ** ३ वायुषाकालं ॥ **ॐ ईं तँ** ३ अग्निषाकालं ॥ **ॐ ईं वँ** ३ जल
षाकालं ॥ ॥ **अद्यादि** ॥ वाक् ॥ अस्मगओ २ स्वद्वदवगायानिह्य

कर्मदेवार्चनपूजानिमित्त्यार्थनःकुरुमार्तुबुहैत्रवायनमः॥

॥ कुं डं कुं वुं कुं वुं क्रूरमारुचु महाहं त्रवाय युकास अकि स
हिगायः श्रुद्य नमः पूषा नमः ॥ ॥ कुं डं श्री यज्ञ काली दे वाय
धर्मा र्थ काम मां कार्थेन आ ३ लख दव गापी र्थार्थ निर्य कर्म पू
काम हं करि रण ॥ ॥ पुनः कल्ला कल्ल न ॥ कुं डं अप स पालु ये ह
नायेः हरणाः हरवी सं लिङ्ग ॥ यहणा वि च्छ कला वः नमः अ कु म

वाङ्मया ॥ हृणो पुरना ॥ निसि संकल्य ॥ ॥ उं डं पशु दूद दसद
भनयः अक्राय ददा ॥ कतगात्र गयं ॥ ॥ कादिकादिः दिग्गन्धर्व ॥
॥ उं डं लं ॥ आदि देव लाकपा लखा २ ॥ उं डं डं हुकादि दभर तवाय
२ ॥ उं डं डं अभि गाडा दिज्र वृह तवाय २ ॥ उं डं डं अक वटा नपं यं भंव
क्लाब्ध दिज्र वृह तवाय २ ॥ मिख संकगाना ॥ ॥ थअ के शासन ॥
उं डं शायत्र भक्ति कमला लाय ३ ॥ उं डं डं मा लाय ३ ॥ उं डं डं आ स

दकु

मलकालकमलाहाय ३ ॥ **ॐ** किनि २ विन्व कोङ्क लयङ्क अक्रायरुट्
॥ **क्रो** ॥ **ॐ** **हुँ** रुट् वक्रपंङ्कल साहा ॥ **ॐ** वलमक्रलक्रलमचनक्रो **हुँ**
रुट् साहा ॥ **दम्** हात्रवन्धनं ॥ ॥ **कुँ** **हुँ** गुत्रुला २ ॥ वामवाहा ॥ **कुँ** **हुँ**
हँ हेनवाय २ ॥ **कुँ** **हुँ** गुक्ककालिसहदयाय २ ॥ **ह्रो** सहदयनमस्काल
कला ॥ ॥ **गुत्र** हेनवससुदवागायाकः श्राल्लोशन ॥ ॥ **प्रा** लयाम
॥ **यँ** ३ पूलक ॥ **नँ** ३ क्रुहक ॥ **वं** ३ नवक ॥ ॥ **वगि** सी न्यास ॥ **ॐ** **हुँ** किनि २ वि

बकाङ्क नाथोङ्कः श्रुतायहृत् ॥ नमो हगवति हल्लमलाय **ॐ श्रीं** जंशं च
यपाङ्कां ॥ **ॐ** रुद्रिकाय कूलदीपाय **ॐ श्रीं** नरुं नाथ साहा ॥ **ॐ ॐ ॐ**
वर्ब मि खे **ॐ श्रीं** मथ माय वीषट ॥ धात्र श्रुधात्र श्रुधात्रा मुखिवद्रूपा
य **ॐ श्रीं** जनामिकाय **ॐ** ॥ **ॐ ॐ** महकात्रिकाय **ॐ श्रीं** कनिष्ठकाय नम
॥ **ॐ** किनि २ विश्व काङ्क नाथोङ्कः श्रुतायहृत् ॥ **ॐ** नमो हगवति हल्लम
लाय श्री उड्व वकाय पाङ्कां ॥ **ॐ** **ॐ** रुद्रिकाय कूलदीपाय श्री पूर्वव

कुपय पादुकां ॥ ५ **ऊँ ऊँ ऊँ** वरुच नमि ख आ द कि ल व कुाय ३ ॥ ५ धात्र अ
धात्र अ धात्रा मुख व दू नू पाय आ उ रु न व कुाय ३ ॥ ५ **ऊँ ऊँ** मह का ति
काय **ऊँ** आ पा शि म व कुाय ३ ॥ ५ कि नि २ वि च का दू ल य आ उ डा ड व
काय ३ ॥ ॥ ५ न मा रु ग व मि ह ल म लायः **ऊँ** आ रु द या य न म ३ ॥
५ **ऊँ** कू णि काय कू ल दा पाय **ऊँ** आ मि त अ सा हा ॥ ५ **ऊँ ऊँ ऊँ** वरुच नमि
ख दू आ मि खा य वी ष ट् ॥ ५ धात्र अ धात्र अ धात्रा मुख व दू नू पाय क

ववायद्रुं ॥ ५ कौं कौं महन्नात्रिकाय कौं श्री नयययाय पाइकां ॥ ५ किनि
२ विवकाङ्क लयङ्क श्रुमाय रट ॥ ॥ मगा सिद्धिलक्ष्मीया ॥ शुं सक
लभ श्रुपथमनिश्रुमाय रट ॥ शुं पत्रमहं सिनिश्रुद्रु क्षायनमा ॥ शुं नि
र्वा नमार्जदविगर्क न्यायसाहा ॥ शुं विषमायपु वयभमनिमध्माय
वषट् ॥ शुं सकलइतिगात्रिकुं अदलनिःश्रुमासिकायद्रुं ॥ शुं सदा
पदा क्वाधिगत्रनिकमिक्काय वीषट् ॥ शुं सकलभश्रुपथमनिश्रुमा

यद्दृष्टं ॥ ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धिदायिनी श्याउर्द्धवक्त्राय पाद्मकां ॥ ॐ नमः
सर्वसिद्धिमाय श्यापूर्ववक्त्राय ३ ॥ ॐ नमो दिश्यादिगानन्दनन्दिनाय
दक्षिणवक्त्राय ३ ॥ ॐ सकलकूलवक्त्रनायिकाय उत्तरवक्त्राय ३ ॥ ॐ
हृगवश्यं बहुकापालिन्योपस्थिमवक्त्राय ३ ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धिदायिनिः
श्याउर्द्धवक्त्राय ३ ॥ ॥ ॐ पत्रमहं सिनि सर्वज्ञात्रहृदयाय नमः
॥ ॐ निर्वाणमार्गदर्शितृपि मित्रसखाहा ॥ ॐ विरवमापपुवप्रसमानि

अनादिवाधनाय निखाय वषट् ॥ **ॐ** सकल इति गात्रिष्टुक् अदत्त नि स
गत्तुक ववायद् ॥ **ॐ** सर्वापदां ह्ना भिग्नानि अत्रूफ अक्लि नय प्रयाय वी
षट् ॥ **ॐ** सकलमभ्युपमथ नि अक्राय रुट् ॥ **ॐ** मि ॥ ॥ अथ पूर्व भिषा
या ॥ **ॐ** अं अक्राय रुट् ॥ **ॐ** कनिष्ठकाय नमः ॥ **ॐ** अनामिकाया स्वाहा ॥
ॐ मध्यमाय वषट् ॥ **ॐ** गर्ज्ज्नायद् ॥ **ॐ** अंगुष्ठाय वीषट् ॥ **ॐ** अं अक्रा
यरुट् ॥ ॥ **ॐ** उर्ध्वकाय पाद् ॥ **ॐ** पूर्ववक्त्राय ३ ॥ **ॐ** दक्षिणवक्त्राय

ये ३ ॥ **रुँ** उरुनवकुाय ३ ॥ **ह्रौं** पश्चिमवकुाय ३ ॥ ॥ **व्रँ** हृदयाय नमः
॥ **ह्रौं** मित्रसहाहा ॥ **ह्रौं** मिषाय वषट् ॥ **रुँ** कवचाय हुँ ॥ **ह्रौं** नष्टप्रयायः
वोषट् ॥ **व्रँ** जूजुमाय रुट् ॥ ॥ **ह्रौं** श्वरीया ॥ **व्रँ** किं निरविशकाङ्क
लय अननकभकिश्रुमाय रुट् ॥ **व्रँ** एगवमिज्रम **ह्रौं** हृगकमलाय जू
हुं वकाय हुँ ॥ **व्रँ** **ह्रौं** कृष्णिकाय कूलदीपाय गङ्गा **ह्रौं** न्यायव्रँ ॥ **व्रँ** **ह्रौं**
ह्रौं **ह्रौं** वधवाय मधु मायव्रँ ॥ **व्रँ** वलमकूलः जूया नाम्नी वक्ररूपाय
व्रँ **ह्रौं** कृष्णिकाय कूलदीपाय पूर्ववकुायव्रँ ॥ ३

ब्रह्ममिकायने ॥ ॐ कौं कौं महन्नात्रिकायकनिबुकायने ॥ ॐ किनि २
विबुकाद्वलमयब्रह्मनक्तमकिब्रह्मायरुट ॥ ॥ ॐ एगवमिब्रह्म ॐ
रुलमलायउडविबुकायने ॥ ॐ कौं कौं सुवर्चत्रायदकिलवकुयने ॥ ॐ
कौं कौं महन्नात्रिकायपमिब्रह्मवकुयने ॥ ॐ किनि २ विबुकाद्वलमयउडवि
बुकायने ॥ ॥ ॐ एगवमिब्रह्म ॐ रुलमलायसर्वज्ञागददयायनम
४ ॥ ॐ सुकु कौं कौं कायकूलदीपा ॥ यरुपि मित्रसखाहा ॥ ॐ कौं कौं
ॐ वनकूलसुधागामूर्यावद्रूपायउरुवकुयने ॥ ३

मूँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥
स्वी वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥
नयनयनाय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥
ट् ॥ ॥ उद्वेग ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥
नमः ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥
माय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥ वँ वरुत्राय अनादि वाधनाय मिषाय वषट् ॥

अंगुष्ठाय वीषट ॥ ॐ क्रीं सोः ध्वं क्रीं अम्नाय रुट ॥ ॐ क्रीं सोः ध्वं क्रीं रुदया
यनमः ॥ ॐ क्रीं सोः क्रीं क्रीं मि ॐ तसखाहा ॥ ॐ क्रीं सोः सोः मि ॐ वायव
षट् ॥ ॐ क्रीं सोः सोः क्रीं क्रीं कवगायद्रं ॥ ॐ क्रीं सोः क्रीं क्रीं नगुगयायवो
षट् ॥ ॐ क्रीं सोः ध्वं क्रीं अम्नाय रुट ॥ ॥ मूलन क्रीं वाजम क्रीं
न्यासः ॥ ॥ ऊलपा ॐ गपूजा ॥ ॐ क्रीं वापकमनुलायनमः ॥ ॐ क्रीं
रुट पिषूठियुजालयामि ॥ ॐ क्रीं गुद्धकाल्या ॐ खज्ज्यायकाल

क्रीं २
ॐ

यामि २ ॥ **कुं दुं** गुह्य काल्याभं खज्र्यां स्थापयामि २ ॥ **कुं दुं** मूं वक्रिम
बुलायदभ धर्म कलात्मन २ ॥ **मं वा सं पू** ॥ **कुं दुं** गुह्य का वू ल्याभं
खज्र्यां स्थापयामि २ ॥ **कुं दुं** मूं सूर्यमबुलायकादभ कलात्मन २ ॥
॥ गहाणा संगंभदिना वू नः गंभयनामः जमूनाय २ कावश्री
२ को भिकी २ नमदाय २ श्रियि मूखी २ सफभगवा कलसै ल्या २ ॥
लंख भन ॥ **कुं दुं** गइ वयामून वल्लो दावनी सतवनी ॥ नमदसिंध

कावत्रीः ऊल सिन्धु निधि क्रूर ॥ कुं कुं सुं ॥ सोमसु लाय वा उम कला
लाने ॥ संपूजा ॥ मत्स्य मूडा ॥ ॥ कुं कुं सुं ॥ वरुण द वी वरुण
न कालिकाय ॥ विष्णु ॥ सदायाथं विष्णु ॥ खड्ग ॥ मूलन विष्णु ॥ आ
वाङ्म ॥ ॥ अर्घ्य पूजा ॥ कुं कुं सुं कुं ॥ ओम् ॥ अमर अमर गह व अमर गिष्म
अमर गं वरिष्मः अमर गं वस ॥ साहा ॥ ॥ कुं कुं सुं ॥ वरुण द वी वरुण न कालि
काय ॥ ॥ मूलन विष्णु ॥ खड्ग ॥ आवाङ्म ॥ ॥ धनू मूडा ॥ ॥ गम

यसि॥ **ॐ** कूङ्कि काय विद्महे कूलदीपाय धीमहि गन्ना कूङ्कि प्रचा
दयाम्॥ **ॐ** सिद्धिलक्ष्मी विद्महे नमो ध्यायाय धीमहि गन्ना लक्ष्मी
प्रचादयाम्॥ **ॐ** कालनाथि विद्महे कालभक्त्यर्षि धीमहि गन्ना
कालिप्रचादयाम्॥ **ॐ** मिश्रसना ध्याय विद्महे श्री कल्याय धीम
हि गन्ना कूलभक्ती प्रचादयाम्॥ **ॐ** कौस्तुभि पूना देवी विद्महे कौका
मभक्ती धीमहि गन्ना सुन्दरा प्रचादयाम्॥

॥ **कू** लभ धन ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ**

[illegible]

मायनाय नूदंडवांपविणकं कूरु रखाहा॥
सर्वभूतविमायनाय नूदंडवांपविणकं कूरु रखाहा॥
विकारलम्पिनी अस्य दवा स विकारानः हन रखाहा॥ ॥ मत्स्यमूडाः आ
काश्या॥
हा॥
नमो भगवते वासुदेवाय॥

[illegible]

यामि२॥ **कुं३** **कुं३** **कुं३** जूनिमनु लायदभधर्मकलात्मने२॥ **कुं३** **कुं३** कत्रनपाणग
हीत्या॥ **कुं३** **कुं३** **कुं३** दृष्टपाणं पुत्रालयामि२॥ वामहस्तनीधया॥ **कुं३** **कुं३** वृक्षा
पुखनुं सत्रनंकल्या मित्रापत्रिपिजामयग॥ **कुं३** **कुं३** गन्धवन्दननलपयग॥
पाणं विन्दु शिकानः मरुधुं सिखग॥ **कुं३** **कुं३** **कुं३** महाधूपनधूपयग॥ **कुं३** **कुं३** श्रीग
क्रकासिदद्यायकाद्यपाणं लपयामि२॥ **कुं३** **कुं३** **कुं३** सूर्यमनु लायढादभकः
लात्मने२॥ सपूजा॥ पाणपूत्रय॥ **कुं३** **कुं३** **कुं३** वृक्षापु **कुं३** **कुं३** खनुसंलग्नमलखदुलमा
वह॥ आपूत्रिगमहापाणं श्रीपूषदायमानयग॥ मूलमनु नपाणपूलयामि

[illegible]

दा॥ हुँ श्रुमापादा॥ हुँ श्रुमापादा॥ हुँ जाहल्यमानं ध्यात्वाः गोमा॥ ॥
ॐ हुँ कौं श्री सामामगपाद॥ उरु॥ ॐ हुँ कौं श्री सूर्यामगपाद॥ अरु॥ ॐ हुँ
कौं श्री श्रुमागपादादकिं॥ ॐ हुँ कौं श्री वाग्वामगपाद॥ अरु॥ ॐ हुँ कौं
श्री वामामगपादा॥ मध॥ ॐ हुँ कौं श्रानन्दरुत्रवपाद॥ हुँ कौं महासमयद
दयपाद॥ ॐ हुँ हुँ गुच्छददय वीपादा॥ हुँ श्रुमापादा॥ हुँ श्रुमापादा॥
संपू॥ ॐ हुँ कालि२ महायानि नां कौं श्रानय२ रय२ पूत्रय२ श्रुमाक

मद्यः कूत्रवुं डौं नमो महा वात्रलीः कूत्र २ एयुं डौं २ नूँ मूँ पूँ मूँ नूँ जूँ अ क
महा वात्रली अंजु दाषां मू २ यौ नौ लौ वां अं पविशुकः कूत्र २ अंजु कौं गु
काङ्गः मू वगत्र २ ००० नमस्त्याहा ॥ पाणं कू मूँ अ कया मिरवणि ॥ मूलन शि
५॥ अवाङ्का ॥ धनूः शानिः अंखः पद्मः गङ्गा निः विसूलाः कलद्वितीः डूँ म
हायानिः डूँ सलिहाः डूँ महासलिहाः वनाः एयमूडां ॥ मूलन शि ५ मय्य
नं ॥ मूलन आत्मा दि सर्व डवा संहाय ॥ ॥ गुत्र मय्यन ॥ ॐ ॐ गुत्र एया पा
इकां पू ऊ यामि मय्य यामि २ ॥ ॐ गुत्र मदि एया पा इकां पू ऊ यामि मय्य यामि

२॥ ॥ हृत्पुष्टि ॥ आत्मपूजा ॥ **ॐ** वन्दनः श्रुतः सिद्धः माहनिः श्रुतः क
 तादिवसुः पूष्यं २ ॥ पाण्डवचनः ५॥ सिद्धसहाय ॥ ॥ **गुरुपुष्टि** दाहियां म
 लमकुन ५॥ मिलसः कगाना ॥ रुदयसुमर्यनयाया ॥ **कौ** भक्ति लयापाइ का
 मर्यया मि २ ॥ **आविमि** काया ॥ सत्मानं रं वरूपः देवी रूपं ध्यात्वा ॥ अवंग
 लययन त्यात्मात्मने पाण्डव कथा ॥ ॥ **गुरु** देवामभुसपत्रिवात्रपूजा
 ॥ **ॐ** **कौ** श्री कासा कृष्णपात्रा श्री पादा ॥ कृष्णपात्रवाम ॥ ४ कासनायिका
 नपादा ॥ अगदक ॥ ४ मर्यु ५ काहात्रपाद श्री पादा ॥ पूर्ववाम ॥ ४ कक्षाल
 श्रीपाद

मालनिपथ पंचकलिः प्रलयारवधौ पात्रमनय

॥ सिद्धेष्टिगारयमे

[illegible]

३॥ **ह्रीं** साहावक्रियगात्राय ३॥ **॥** सिद्धिलक्ष्मीया ॥ **खूं** **कूं** **ओं** **हूं** महायग
त्राय ३॥ **५** त्रैलोक्येगात्राय ३॥ **॥** विपुत्रया ॥ **वूं** **कूं** **ह्रीं** वक्राविषूत्रदं
अत्र आनन्दसदाभिवर्णगात्राय श्री अम्बापादस्था पादकां ॥ **वूं** **कूं** **ह्रीं** नक्र
पद्मात्राय ३॥ **॥** पूष्यसकनसमित्रसीदवी पूजयन् ॥ **हूं** **खूं** **हूं** सत्मा
नंदवीनूपं विराया ॥ **॥** अद्देगनदवीनूपं पूजयन् ॥ **हूं** **हूं** कालत्रावसं
लीनांः विलसारावः सद्रूपिणी ॥ मित्रासम्या मित्राकासंः निर्वाः नभापत्रम्

त्री ॥ सर्वान्नायधत्री निर्याः सान्निध्यं कुरु मधुसूत ॥ **ॐ नमो ॐ श्री महायानि मू**
डांदर्भयन् ॥ ॥ थडाकं ध्यानम् ॥ बुद्धादिपञ्चकयूगभूमिः दिग्पतीनां
मूलेषु पूर्णैरवभिवाः एतयानलसू । गत्याद्द्वयदमभितः कदविद्मरुः प
द्मलिताः एगवर्गिपत्रमादमस्यां । सिंहलकात्रकपि सकुतुत्रद्वगार्कः पा
लाधत्री सकत्रमानवपकिवकुंः भूलाद्भुतमभिसमूद्रतया सपायुः ख
दाद्व बालक मित्रादि गयानिपद्मां ॥ **ॐ नमो मित्रसंस्थायन् ॥ मूलनयिण्या**

ॐ लि॥ ॥ **थडा कं धान** ॥ क्षा गि सिंह शिवा कपि इत्येक इह नृकटा र्क्षा
ननांः धा गामा क न ह लि वा कि व द नाना नमूर्यं वा डु डं । स्वर्गं कृष्ण स्रगा हि
नः वयूयूनः पिङ्ग रु मि डा निरुं ॥ एते स ह्या मल विप्र हानि द ध मिः व कु नि
कालि रु ड । विड तन न क पा ल ख भ्र न व नाः भ किं व र व द्वां ग कः मृषु अ म गी
अ द न क ग वं ए ल अ क क ल कं ॥ पा द न्ना कूल स र्थ कू द नि द गं व भ ष
उ अं ग यः अं ख पा व क द नु मु व कं सा ड्वा न सिंहं ग य ॥ व मुं मू द न दा नू लं व

दधमिं वामजुके ह्रीं वन्मः ठिउ त्वाव सिक किकामपिगथ। नरुन्य धन्वा
कृष्णः दधु कृष्णमथः प्रिभूल सत्रपद्मं सून्यं पूलकंः कृष्णं नन्दनपात्रिज्ञा
कृत्रिकां सन्का मत्रा मुशुङ्गं। एही मंदि विमगदः सलिक मथ वडन्य (अल
जुकंः पशु पूष्टिकं दध (अः नद्या नू वहुं गथ। मूषुं मां सश खपु रुसमपिः
नदधः सूविगा सन्द धनांः देवी वामत्राद्या कविमलजननीः युष्मका सिंन
मासि॥ ॐ निधनपूष्यं २॥ ॥ डारियां मनुन ससि त्रस प्रियां रुसि॥ ॥

मूल्याध्यानादद्यात्पुष्पवक्रामिः यथा यागक्रमवत् । यस्य विज्ञानमायुल
कालिकासिद्धिदास्यता ॥ १ ॥ निलोत्पन्नदलश्रमाः श्रमिमंतससंरुवा
। दभवक्रामहादवीः शिंभलोवनरूपिणा ॥ २ ॥ अक्षरुत्रभगादश्रुः त
कादल्लेन्नाननादीपकंडवक्रवः वलुयालाभगीमनं ॥ ३ ॥ गदधः
सिंहवदनः पालुलसिद्धिकालिका । गदधः रुद्रवक्रवः कषूसंकर्षनिस्रुतं
॥ ४ ॥ कपिपुष्पसूर्यवामः स्नाहिगंक्रुष्टिकास्रुतं । धूमश्रुमकनंदकः उला

सुतामत्ररुथ॥ ५ ॥ गङ्गावामपिङ्गवर्णः श्रीसुन्दरीपुकिर्निगंदकभंक्रुं
बहुरिगः महामंकात्रिलीस्रगा॥ ७ ॥ गङ्गवकुंभूत्रवामः देवीपुत्र्यकिता
मूर्खं दकस्यामंहयाभ्रः सिद्धियालभत्रीमूर्खं॥ ८ ॥ नत्रवकुंमहादेयाः
गङ्गदकलगत्यत्राः सर्वदष्टाकनालामिः सुकागाडावत्राकिन्॥ ९ ॥ शुव
इकूटित्तारीमाः कालायाः श्रीमूर्खाकुमाः पिङ्गलार्डकटावनुः सुकायाति न
मातिनी॥ १० ॥ सफाविंभगिरिमूर्खुः लभिकाक्षत्रहीषाले कृवाकू

समउत्तरैः मालारिश्चपुकिर्दिगा ॥ १० ॥ अरयंकायषप्रंरःखद्वाङ्गंयाम
अकिर्कं। मनुं धनूश्चक्रयन्ताः वासपुगंरपर्वतं ॥ ११ ॥ कङ्कालंनक्रतंसर्प
वउमुवंभकूदीनी। अदिकांरक्रिपागुंरः शिदनुंरमुमूङ्गत्रं ॥ १२ ॥ अरुण
अउमनूः कभनी वामवाहुरि। वत्रदंककृगङ्गन्यः शिभूलाङ्कभदलुकं ॥ १३
॥ त्रतपून्त्रघटंवालनः पश्च पश्चमगगङ्गं। मन्दारंरुलिकाकृन्तः गामलंपूष्य
मालिकां ॥ १४ ॥ दिनुमंसल्लिकंगङ्गः रङ्गनीश्चकमलुतुं। अवाश्चपापुपू
विश्चः नथावतुंरकृपुलं ॥ १५ ॥ मांसरयपुंवीरुपूतः अविचंदकवाहुरि ॥

विशुद्धिद्यायुर्वर्माशुः कालवर्माहारायका ॥ १३ ॥ हातासङ्कातरवाद्याः
वीरवन्ता विनादिनी ॥ चर्चत्रात्रावधोत्रात्रीः नूपूत्रात्रावहीषन्म ॥ १४ ॥ कट
कांगदकयूत्रः महाहिकगम्भहना ॥ मृन्दमालागलादद्याः श्रापदाकावलमि
॥ १५ ॥ त्रकूपप्रमयीमालाः शुक्काद्याहिराकिंगा ॥ उक्कसूणा कलकन्ठाः या
गपदाकृत्रायका ॥ १६ ॥ सोम्यायस्त्रवलेयूक्ताः नागत्राकाधलङ्का ॥ त्रकू
लुलकाः प्रीतिः पञ्चकालासनाकिंगा ॥ १७ ॥ मिवाहनगइध्वः नालं नादार्दला
किंग ॥ महाद्यत्रलमालासञ्चः कषूठवर्णवकुङ्कु ॥ १८ ॥ एकवकुं विनश्वरः होत्र

वारुत अङ्कितं ॥ कुरु कपाल हस्तः उभयवद्वाङ्मयः ॥ २२ ॥ अथैतवपा
 ०नुः दद्यात्मासनमूयात् ॥ पंचप्राग्वगदधः ॥ वक्त्राद्याः पंचरुगयः ॥ २३ ॥
 क्वाविष्मन्नुदधः ॥ शीघ्रतश्च सदाभिवः ॥ पागः ॥ अमरकधूसः ॥ अगारुप
 वकात्र ॥ २४ ॥ दधुवकः अकिशूतः खदाङ्गयुधधनका ॥ गर्जनी मुखानि
 क्रियाः भिवाधस्तु शिलावना ॥ २५ ॥ पिङ्गत्रकः शिगुस्याहिः रुक्मात्रवरा
 व ॥ वज्रदं नखस्यम्भः पद्मदृष्टि विवाकुमा ॥ २६ ॥ अथीपत्यादित्रन्तं
 वः दिगवर्तु सुवर्तुकं ॥ २७ ॥ पिण्णारुवज्रं वः वाङ्मयकं सम्भक्तिदं ॥ २८ ॥ यम

कषुं वद भुङ्क्षुः धूमं नैऋत्यं प्रकं विवृणोषा भुङ्क्षुः वायुं मं कं व
 र्जं ॥ २८ ॥ कूवेन कूङ्कुमं तं भुङ्क्षुः मीमांसु लकं भुङ्क्षुः कं यंग पातं भुङ्क्षुः
 कं वद पात्रं ॥ २९ ॥ कषुं कलिं भुङ्क्षुः मगं पीतं यं रुसा मत्र क। कषुं र्थ वनः
 वद नैऋत्यं आसनं सर्व कामदं ॥ ३० ॥ त्रकूप प्रासनं दन्दः सह यदल लम्बि
 । सह यदल लम्बि कालायः मासनं पत्रिका लिङ्गं ॥ ३१ ॥ पद्मा पत्रिका दं दवी नृ
 त्या माना सदा दिगा । अथ वा सूर्य मालीनाः सर्व देवा धियन्ति गा ॥ ३२ ॥ मूक
 र्जं कूक्षत्रादि कायः सा सयन्ति विविक्त यन् । एषा सा दऊया देवीः सर्व स म्बुज

यं भवती ॥ ३३ ॥ एवं ध्यायामहाकालिः उद्दिन्नववर्णो वना । एषा क्रमस्यमः
थ क्काः अनाक्यामहं भवती ॥ ३४ ॥ ॐ ॥ ॥ पूर्वया ॥ पुवना कूलसंरु
कः पद्मपत्रविहारी । वल्कलकसंकीर्णः मनु किडस्यमन्त्रितं ॥ क
लास्येषु संहितः गद्ययं (अपत्रिस्तिना । कृपापकृष्टसन्दाहेऽवतुः
विष्णोदलान्वितं ॥ कादिरान्ताश्चतुर्विंशः वल्कलैरूपलम्बितं ग
यमाध्यासिगादवीः समिशाकृष्टिगायिगा ॥ वदमूषुकगामालाः क्षामिभ्रुः
वमर्कनं । निवसिष्ठान्कभकाशः सर्वाहनलक्ष्मिणा ॥ उद्दिन्नववर्णो वना

वल्कलकसंकीर्णः मनु किडस्यमन्त्रितं ॥ क

नः कलकालसदान्वितं । हिरुकासोमवदनाः अरुसुखरुयप्रदा ॥ मिश्राः
सङ्गगागादेवीः अथान्यालमिलान्तसा । ॐ कंरुगामहादेवीः योगिनीति
ध्रुवसिन्धुगा । विष्णुयित्वापयन्ननः कलकालसुखनूपिया । हस्तादास्तत्र
नैकैः अथानन्दसदादिगाया भया भयधैयूकः ॐ कंरुगं विविक्त
यद्ग । नगाद्विषाणभक्तः दार्ष्टिंभर्त्तुकितावगा । अर्धमुखंककंदिवं
मध्यसोमाङ्गपूर्णिगा । दद्याकनालविद्यागाः अर्धात्रकलसासन
॥ यद्गुचक । दयादेयाः दार्ष्टिंभर्त्तुदलेसिन्धुगा । अर्धमुखानुवर्ष

मिः अमृतं दिवा नृपिनी ॥ वर्षस्य सासह साधैः प्रावयन् कं कृता क्रमः ।
ॐ लं रूपा महादेवीः पी ० ल्हा पी ० म ध्वग्न ॥ विन्क यित्वा विध्वान्न
नग्न सन नृपियः । आदि विद्या समुच्चार्यः विद्यायुदेषु संस्तिगा ॥
श्री कृष्णिका पुण्यावः सर्वकर्मरुलपदा ॥ ॐ मि ॥ ॥ पश्चिमया
॥ वयसं संस्तिगा नदवः खवर्नं नृपलम्भ रिगं । एकवक्तुं विनयुवः उजा
वादनं ध्वनिनं । अमत्रं पशुवान्नं यः खपमद्वं न वक्तुं । अं खं वं न

वाद्यंयः वनदाहयदक्ति॥ वामेखदाङ्गभूत्रंयः पाभंयपूरुकन्ध
नू। घर्षा कपालंवीभंयः अरुयंरुयंनान्ननं॥ पदुनवद्विनंजानूःवा
मात्रुत्तांयदेवती॥ एकवकुंजिनयांयः अत्रुभवर्षवसुगा॥ द्वित
तांवनदादकुः सिंहलामुयसर्वसू। नानाहत्रभसोरायाः सर्वलकु
भसंरुनं॥ हेनवानन्दनूपायः रुषांरुषुकाकिंनं। एवंध्मत्वावता
ग्राहक्रियसिद्धाकिमानवा॥ ॐ नि॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मीया॥ ध्मयत्पता

पत्राभक्तिः विभक्त्यसौ कत्रमयागां। पूर्निर्मापूनिर्माङ्गयाः त्रिनिगासात्वगा
स्तगा॥ भंश्यापत्रापत्राभक्ताः भून्वागीगानि त्रिङ्गना। महामङ्गामयील
क्षीः तन्मिमकाद्यायूगापमा॥ निर्मला निष्कला देवीः सकलास्तुल्यविद्य
हा। पञ्चवक्त्रादभक्तुङ्गाः प्रियंवदनयनेयूगा॥ लवणवन्महादेवीः महा
पुत्रपतिहिगा। नारकाक्षकमध्वकाः सिद्धिगानिना पूजिगा॥ लोभ्यायुज्य
रावनः साधककासमाधिगा। दानिगास्याल्लिहानाः कात्यायुषं कर्मजग
त्पाडकासाक्षात्सयावनः वासयस्तुलपर्वगा॥ कविर्द्वैतकविरूपः कवि

सं हं रुतगं कृत्वा। कायत्सु कृत्वा विपात्यः स्वगन्तुं कृत्वा प्रवृत्तः॥ लम् लम् लम् लम्
न लेयूफाः उत्र गेन्द्र विरूषिणा पाभङ्ग मधना देवीः वत्र दारय पा निना ॥
सद्य हस्त धर्म खड्गः उलास्य काल काल लं। वाम खड्ग मयूयः दक्षिण मूल
मूल मं॥ अथ न क पुत्र नोडः उलास्य कृत्वा निगं। मथ न्यस्य कृत्वा मूलः संक
मं लम् निगानिगा॥ वाम तु कृत्वा दिवाः महात्र न्यस्य पूजितं। अथाप्यस्य दिना
देवीः उत्पन्ना याम देह म॥ अकासान् कुरु देवः विष्णु व्याप्य कृत्वा हिना। अथ
निना महा देवीः सिद्धि लब्ध कुरु यथा ॥ ॐ नमः ॥ ॥ उद्धृता ॥ वालाक मधुलाः

英

॥ द्वात्रिंशत्पुकिंशः ॥

ॐ हा ग क २ ॐ ह मि ष २ ॐ ह सं नि ध न २

ॐ हसन्निहिगारुव२ ॐ हसन्मुखारुव२ श्रुतादिस्तानः कृत्स्नममयूजागृहानः
 इन्द्रवयुं ध्वजं त्वामगीकृत्यः रुद्रसंनतः संमुखीकृत्यः यानिभूतादिर्जयन् ॥

॥ जीवन्मासा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यंत्रलत्रं अं घं संह सं हाँ संह सभ्या गुञ्ज काली दे
वाऽपान्म गुरुपात्मा ॥ ॐ ह्रीं १३ आगुञ्ज कालिदेवाऽजीवं गुरुहस्तिका ॥

A red seal impression, likely a collector's or publisher's mark, located in the bottom right corner of the page.

गुड

[illegible]

ॐ ह्रीं श्रीखन्दवन्दनं निवदयामिः श्यादि ॥ ॐ ह्रीं सिद्धत्रयकवन्दनं श्यादि ॥
ॐ ह्रीं श्रीकृष्णवन्दनः श्रीलंकालं नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं पूषां निवदयामिः नानापूषा
श्यादि ॥ ॥ धूपपान्नं ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं धूपविन्दुष्टिकानमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं विडं लि
खन् ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं धूपाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रवाङ्का ॥ धेनुयानिमूजा ॥ ॥ घन्
पूजनं ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं कृष्णधनिमकुमाननमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं वाहा ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं कृष्णधनिचक्षुः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रवाङ्का ॥ धेनुमूजा ॥ घन् वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं

[illegible]

॥ अंखडलनयाकलं ॥ मूलमकुलनयापाउडवानः शिखपाकलं ॥ अमग
मयं अंखा ॥ नैवाद्यसविन्दु शिकालमध्वं वीकं लिखन् ॥ वनस्यानगं ॥
मूलनऊपध १० ॥ फडा २ दारिसंऊपध १० ॥ पूऊनं ॥ वं अमनस्यकालिका
य अम्यापादशिख ॥ आवाङ्का ॥ धनूयानिः पंययमसमूडां ॥ चल् वाद्य ॥ सं
कल्प ॥ अन्नन्महातसंयादि ॥ अर्थकाय ॥ मधूमकुमहामायः वात्रलीदि
यत्रूपिनीः गहानकपयादवीः ऐलाक्कहालिकात्रिली ॥ दारिसंआयम

नं२ ॥ **ॐ क्लीं** विशान्त्याय स्वाहा ॥ ॥ कायपंचयमहा ॥ **ॐ ह्रीं** शांभय स्वाहा
॥ २ **श्रृ**पानाय २ ॥ २ **द्या**नाय २ ॥ २ **उ**दानाय २ ॥ २ **स**मानाय २ ॥ २ **श्रा**त्मगत्वेन
श्रीगुरुकालिकासुदहं **ॐ** ध्यामि २ ॥ २ विशान्त्येन श्रीगुरुकालिकापत्र
दहं **ॐ** ध्यामि २ ॥ २ भिवगत्वेन श्रीगुरुकालिः सुप्रदहं **ॐ** ध्यामि २ ॥ २
सर्वगत्वेन श्रीगुरुकालिकाः समस्तदहं **ॐ** ध्यामि २ ॥ इति संध्या २ मन्त्र
नकायः साङ्गभयस्य त्रिवागत्वेन यः सर्ववकुनरुक्थम् ॥ ॥ नर्यनिदा

[illegible]

[illegible]

दि ३ त्रिया य २

नाय ३ ॥ **ॐ** नकुवनलय श्री ३ ॥ वसि ॥ साङ्गाय ॥ श्रावाङ्गा ॥ धनूयावि ॥ गय
न ॥ पत्रि ॥ **नवात्मा** ॥ **ॐ** पद्मात्माय ३ ॥ **ॐ** नत्रात्माय ३ ॥ **ॐ** नमो ॥ ज्ञानन्दभक्तिहे
नवानन्दवीराधिपय नमो ॥ श्रीनवात्मागुनमनुलर ॥ द्वात्रिकायसम
यादयो ३ ॥ **ॐ** नमो ॥ श्री ॥ नन्दभक्तिहेनवानन्दश्रीमहो विद्यानाङ्गभवा
नमो ॥ श्रीनवात्मा ॥ गुन मनुलरद्वात्रिकायसमयादयो ३ ॥ वसि ॥ श्रावा
ङ्गा ॥ धनूयावि ॥ **॥ श्रीकन् ॥ ॐ** वषात्माय ३ ॥ **ॐ** सिंहात्माय ३ ॥ **ॐ**

ॐ आनन्दभक्तिहरेत्रवानन्दवीताधिपत्ये ॐ श्रीकलनाथसुभक्तिहरे
ना ॐ य ३ ॥ बलि ॥ ॥ **वक्रा** न्यादि ॥ हंसास्त्राय ३ ॥ ३ ॥ ॥ **वक्रा**
ली ॐ जिगाइहरेत्रवाय ३ ॥ **ॐ कं** महं धनी नू नू हरेत्रवाय ३ ॥ **ॐ कं** को मानीः
व ॐ हरेत्रवाय ३ ॥ **ॐ कं** वेषू का धरेत्रवाय ३ ॥ **ॐ कं** वात्राही उन्नरु हरेत्रवाय
३ ॥ **ॐ कं** पं ॐ डा नी कपालाभि हरेत्रवाय ३ ॥ **ॐ कं** यं वामू अलीष न हरेत्रवाय ३ ॥ **ॐ**
ॐ महालक्ष्मी भं हात्र हरेत्रवाय ३ ॥ ॥ धर्म भं बलि ॥ **ॐ कं** थं दं थं नं ॐ वात्राहि ३ ॥

तिथि ॥ वलि ॥ साक्षाया ॥ श्रावाक्ष ॥ कोलया निमूडा ॥ ॥ पश्चिम ॥ ॐ दृष्टा ह्याय
 ३ ॥ ॐ सिंह ह्याय ३ ॥ ॐ कौ साहा वाकि पंगा ह्याय ३ ॥ ॐ कृष्णाने कांथ घा
 ने कां घात घात न कुन दूँ सर्वग ४ सर्व सर्व दूँ सर्व को नूत नूत पं ३ ॥ ॐ
 वज्र दूँ भिन्ना भूँ उँ ला का कर्षनी की कामा इडा विनी ॥ इमी मुी महा का
 ल कामिनी ॥ ॐ सो सः ३ ॥ वलि ॥ ॐ नमो हगवणि कुं कृष्ण काय जां जां दूँ घा
 ने जूधा ने जूधा नामूखी ॥ कां कां कि नि २ वि ३ ॥ ॐ नमो हगवणि कुं कृ
 ष्ण काय जां जां दूँ ३ ॥ नमो जूधा नामूखी कां कां कि नि २ वि ३ ॥ ॐ

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नामस्वी क्लीं क्लीं किं नो २ वि ३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वलि ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नन्दरी त्राधिपयः ॐ ३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
विष्णुनामो ॐ ३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
त्राधिपयः ॐ ३ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ श्री शानन्दभक्तिहरेत्रवानन्दविनाधिपलयम् श्रीपश्चिममूलकान
रदा श्री त्रिकाय ३॥ ॐ ५ सप्त शानन्दभक्तिहरेत्रवा श्री नन्दश्रीमहाविद्या
गङ्गा श्री ५ आपश्चिममूलकानरदात्रिकाय ३॥ ॐ ५ ५ सप्त शानन्द
भक्तिहरेत्रवानन्दविनाधिपलयम् ५ ५ आपश्चिममूलकानरदात्रिका
य ३॥ खड्ग ॥ बलि ॥ शवाङ्क ॥ लिङ्ग ॥ यानिमूडा ॥ ॥ ॐ वृषाक्षाय ३॥ ॐ
सिंहाक्षाय ३॥ ॐ ५ श्री शानन्दभक्तिहरेत्रवानन्दविनाधिपलयम् श्री श्री

पश्चिमनिर्वाणकं वृक्षं वृक्षं वृक्षं ॥ वासः ॥ आवाहः ॥ धनः ॥ यान
मूडा ॥ **वृक्षः** सप्तश्रीकृष्णिका देवाय साङ्गायः स वासनायः स पतिवात्रन्मय
सायूधायः सद्यः पवात्रनः अभक्तिः सहिगाय पादकां पूजयामिः नृदं वलिं
गृह्ण ॥ साहा ॥ आवाहः ॥ सिंगः यानिमूडा ॥ ॥ **साकसा** पश्चिमदगुषादय
या ॥ ॥ **सप्तश्री** पूजा ॥ **वृक्षः** वृक्षिणगाहाय ॥ **वृक्षः** वृक्षः वृक्षः वृक्षः
नन्दनाथः सप्तश्रीभक्तिः सहिगाय ॥ जिध ॥ वलि ॥ आवाहः ॥ यो

विमूढा॥ ॥उग्रवल्गु॥ ॐ सिंहावाय ३॥ ॐ महिषावाय ३॥ ॐ भुम्हावाय
३॥ ॐ विभुम्हावाय ३॥ ॐ क्रीं नागपद ॐ उग्रवल्गु त्रिपुमर्द निहृदं सदा
नरुत्त्यामांशं स मरुह नथा उग्रवल्गु देवी मायाइका ॥ छिध ॥ षउड
वालि ॥ साङ्गाय ॥ आवाङ्ग ॥ विन्दुः या विमूढा ॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मी ॥ ॐ क्रीं श्री
रुं महाय गावाय ३॥ ॐ क्रीं श्री रुं नरुडय गावाय ३॥ ॐ क्रीं रुं हां रुं क्रीं
क्रीं नमः श्री सिद्धिलक्ष्मी देव्या ३॥ छिध ॥ षउड ॥ वालि ॥ ॥ माला

मनु॥ **ॐ** ह्रीं श्रीं सिद्धि लक्ष्मी देव्याः मालामनुसूया भवतः साधितं नृपुण्ड्र
॥ श्रीं सिद्धि लक्ष्मी देव्याः **कौं** वीरुं **हुं** भक्ति **रुं** कालकं सर्व सिद्धि साधनं
पवित्रियोगः ॥ **रुं** **हुं** नमः सर्व सिद्धि योगिनी ल्या नमः सर्व सिद्धि मातुल्या
नमा दित्या दिगानन्द नान्दिगायः सकल कल वक्र नायिकायः रग वर्यय
पु कालिनोः मद्यथा **हुं** **कौं** **हुं** **कौं** **हुं** **कौं** **हुं** नमः यत्र महं सि नि निर्वानि मान्न
देवी विषमापपु वपु नमः नि सकल इति गात्रि ह्रस्व अदल नि सर्वापदा

श्रीविष्णुत्रयीसकलमयप्रसन्ननिदवीः आगकरहसरवल्लभ २ ननत्रयि
त्राकवसाहकृतिः समसर्वमकुम्भद २ खाहि २ त्रिभूलन. हिन्धि २ ख ५
नागाउय २ कंदय २ गावशावत्समसकलमनात्रधनुः साधय २ यत्रमका
त्रनिर्कहगवागिः महार्हत्रवरूपधनिनिप्रिदभः षत्रनमिगसकलम
कुमातः पुनगऊनवत्सदेवीमहाकालिकालनाभिनिः ॐ ॐ ॐ प्रसीद २
मदनाशुताः कूत्र २ सूनासूत्रकन्याकाः ॐ ॐ ॐ रुद्रसाहा ॥ श्रीसिद्धि

श्री देवाः १ मातामनुजपाय ॥ वलि ॥ **ॐ** नमो हगवमि सिद्धि लब्धाय
त्रीरुद्र २ स्वाहा ॥ **ॐ** ॥ वलि ॥ साङ्गाय ॥ श्रावाङ्गा ॥ पद्मः सिंगः भक्ति
नात्रावः श्रद्धाः यानि मूडा ॥ ॥ **म ॥ ॐ** गिया ॥ **॥ पूर्व नवात्म**
॥ ॐ आदिना अय २ ॥ **ॐ** हेतवना अय २ ॥ **ॐ** सामना अय २ ॥ **ॐ** शमद्विनना
अय २ ॥ **ॐ** महापद्मात्माय २ ॥ **ॐ** महापद्मात्माय २ ॥ **ॐ** श्री नवात्मानन्द
नाथ श्रद्धापाय ॥ **ॐ** ॥ वलि ॥ श्रावाङ्गा ॥ विमिषाप **ॐ** म. यानि मूडा ॥

ॐ॥ **ॐ** वं गगनारूपा तं धरणी ॥ १० ॥ आत्मना सवकी सनाथ समयात्मा ३ ॥
ॐ॥ **ॐ** त्रं हापत्ररूपा पूर्ण नित्रिपा ॥ १० ॥ पूर्णमा कूलं गा सनाथ महका कामा
३ ॥ ने ॥ **ॐ** पंकतिरूपा कामरूपपा ॥ १० ॥ कामात्मा मदा धितनाथ कांकनामा ३
॥ वा ॥ **ॐ** गिरुग ॥ शवाद्य ॥ बलि ॥ ॥ **ॐ** मिष्टि सनाथ ३ ॥ **ॐ** अति सना
थ ३ ॥ **ॐ** वरि सनाथ ३ ॥ **ॐ** वरि सनाथ ३ ॥ **ॐ** उष्टि सनाथ ३ ॥ शवाद्य
बलि ॥ **ॐ** गिरुग ॥ दिपं वका ॥ ॥ **ॐ** कां ॥ याग विमल पूतिन्दीमा ३ ॥ **ॐ** कां ॥

सिद्धि विमल वाम कान्मा ३ ॥ **ॐ** सर्वरू विमलरू द्विकान्मा ३ ॥ **ॐ** अना
दि विमल पूलिन्दीम्मा ३ ॥ **ॐ** समय विमल समतिम्मा ३ ॥ वसि आवाइ
॥ **ॐ** विमल पंचक ॥ ॥ **ॐ** खिं खिं न्याम्मा ३ ॥ **ॐ** ससाम्मा ३ ॥
३ षड्मा ३ ॥ **३** सविपूत कान्मा ३ ॥ **३** गल सुन्दरीम्मा ३ ॥ वसि आवाइ
॥ **ॐ** दृष्टादि पंचक ॥ ॥ **ॐ** अशियानपी १० रुदयानन्द देवक
पनाम्मा ३ ॥ **२** कालंधनपी १० रुनुलानन्द देवक मलाम्मा ३ ॥ **२** पूर्वगा

त्रिपी ॥ ० वक्रानन्ददेववकुम्भ ॥ ३ ॥ १ कामरूपपी ॥ ० वक्रानन्ददेवसूत्राम्बा
३ ॥ १ पत्रापत्रपी ॥ ० तुषिस्तनाथमातंगी ॥ ३ ॥ वलिश्चावाङ्मा ॥ ० ॥ मि
पी ॥ ० पंखक ॥ ॥ हंसास्त्र १ ॥ वृषास्त्राय १ ॥ मयूनास्त्राय १ ॥ गरुडास्त्राय १ ॥ म
हिषास्त्राय १ ॥ गजास्त्राय १ ॥ शिवास्त्राय १ ॥ नागास्त्राय १ ॥ ॐ श्रीं पुष्यागमहाकृष्ण
पुष्यागमम्बाः ॥ श्रीं मङ्गलनाथः ॥ श्रीं मङ्गलाम्बा ॥ ॐ वक्रानन्ददेवसूत्राम्बा ॥ १
वक्रानन्ददेवसूत्राम्बाः ॥ ० लावणिकनाथः ॥ ० लावणिकाम्बाः ॥ १ ॥ माहेश्वर

[illegible][illegible]

ॐ श्री देवी कागमहाकृष्ण देवी कागाम्याः श्रुं वरही घननाथ श्रुः श्रायाम्या ॐ म
हालक्ष्मी ३ ॥ वलि श्रावाक्ष ॥ ब्रह्मका नषा ॥ नू गिययादि ॥ ॥ ॐ क्रीं श्री कालि
२ महाकालिः मां सहा निगहा कनिः ॐ क्रीं क्रीं न कृ कृ पू मू रवी देवी मामां पस्य
न्निभ युवः रुदयद्रुगिम्बा ३ ॥ ३ हगवति रु ववा अलिनी क्रीं रू धि न मां स हा क
निः कापालः खदाङ्ग षट्क अत्रिनीः हुन २ दह २ पय २ यम २ म २ सय २ नू य २
ॐ क्रीं मित्राद्रुगिम्बा ३ ॥ ५ मूं मूं मूं मिषाद्रुगि मित्राम्बा ३ ॥ ५ ॐ उरुगति

[illegible]

[illegible]

किनी विम्बना थयः **ॐ ॐ** गुड्डकृष्टिकमनिपूतकलाकिनी श्रुमा ३ ॥ **ॐ ॐ**
सग्नममग्नलगह **ॐ ॐ** हागगममिनीः हायिं सहस्रकाटिया निनी हि
सहश्रनाहगल्लानः मन्त्रावतले मन्त्राधंसाधनः **ॐ ॐ** **ॐ ॐ** कांकांरू
ॐ काकिनी सर्वना थय **ॐ ॐ** गुड्डकृष्टिक श्रुनाहग **ॐ** काकिनी
श्रुमा ३ ॥ **ॐ ॐ** गगनाम **ॐ ॐ** गगलगह हागगममिनीः वसुषष्टि सहस्र
काटिया निनी हि सहविशुष्टिलानः शोडावतले कलाधंसाधन **ॐ ॐ** **ॐ**

[illegible]

मकनाथदेव ३ ॥ वलिआवाइ ॥ कला मिनादिपशुका ॥ ॥ **ॐ** वड
उहाया अरुगुहानाथः अरुगुहानी ३ ॥ **ॐ** अरुगुहायां असनीप्रनाथस
थप्रवाधनी ३ ॥ **ॐ** सनीगुहायां अरुलनाथ अरुनीमा ३ ॥ वलिआवाइ
॥ अरुगुहा अरुगुहायां ॥ **ॐ** अरुगुहायां नमो अरुगुहायां अरुनीकमहा
हरी नरु २ अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां
२ अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां अरुगुहायां

हारं नवीः ऊरु २ ऊरुय २ हां २ हिलि २ ऊं २ ऊं २ हा वृजाम त्रीयः किलि
२ गऊ २ ह २ ऊं मन्ना त्रिकाया साहा ॥ **ॐ ऊं ऊं ऊं ऊं** मा रुन्द हं नवीयः कि
लि २ गऊय २ ऊं २ ऊरुय २ ऊं ऊं ऊं ऊं आ कूडि कारथ कमलाय साहा ॥
वलिः आवा द्य ॥ प्रिकान संपूज्य ॥ राग विद्या नय ॥ ॥ **ॐ** कूल को लि नि
विम्रह महामा लिनी धाम ह नन्ना कूडि प्रया दयात् ॥ **ॐ ऊं ऊं** नामा लनी
विम्रहः विरुला लिनि धाम ह नन्ना कूडि प्रया दयात् ॥ **ॐ ऊं** मा गं गिनी विम्र

हं कूलकोलिनी धामहर्गना कूटिप्रवादयाम् ॥ वलिः श्रावाश्च ॥ शिकान
अयणी ॥ ॥ गलः वट्टकः कुतः यानिः दकवामसंपूश्च ॥ षड्कोलस्य वाश्च

अकूलकोलस्य हरग्नसंपूश्च ॥ वलिः श्रावाश्च ॥ ॥ मल्ल मूलनत्रधुः ष

उद्ग ॥ वलिः श्रावाश्च ॥ पद्मः शिभिखाः यानिमूडा ॥ विन्दुशिर्यं ॥ ॥ कं कं

कं शिखानाथय ३ ॥ कं कं कं निखासकन्दमहाहर्गनाय ३ ॥ वलिंगक २

खाहा ॥ श्रावाश्च ॥ ॥ ५ मंगारुनपूरुकाय ३ ॥ वलि ॥ ॥ मूल

ASHA ARCHIVES

1337

ASHA ARCHIVES

२५५

कासां: नागजगुलमन्त्रिणं। अलादभशुकार्थवः महयं नष्टमूडया। अंकुभं स्व
प्रभुत्रयः विमूर्खं वर्कधमिना। उमत्रूपत्रभुधमिनीनः दानरुशुहाहन। दकि
नेन धमिनागाः वामे वापि वदाम्यहं। वत्रदंदुटकं काशं: पिनायासपूरकं
॥ अकमात्ताधत्रंदवः घलामिणिकधमनं। उममूडाहलकपू: ५ नमनुवि
नाकिनं॥ सिंहवर्मापत्रिधनं: हादाहत्रनहूषिना। मूवुमात्तागललीमः
सर्वरुद्राय विमन॥ भक्तिरूडाईकायशुः नियं निबानिकं भत्री। उर्ध्व
कमहसा निरुमिकामसंवि॥ आपीनं पूर्ववर्कपुः नकहागकसं निहं॥
विनयन। पत्राउड विवकुनिः पीनस्थामात्रापरा॥

[illegible]

विष्णुहं मानन्द देवाय धाम हं नाना नूड प्रवादयाम् ॥ बलि ॥ आवा द्या ॥ छिभि
खाः पद्मः योनि मूडा ॥ विन्दु एयं ॥ ॐ नित्तल देवा ॥ ॥ उड्ड पूजा ॥ ॐ क्रीं ह्रीं वृक्ष
विष्णु नूड भ्रतः आनन्द सदा भिव शगा स्वाय श्री अम्बा पाइ ह्या २ ॥ ॐ क्रीं ह्रीं न
कूप मा स्वाय पायू ॥ ॐ क्रीं ह्रीं छिपूत्र बाहा सत्र भ मिदे वामा पायू ॥ छिभ ॥
बलि ॥ मां स स्रगा रुक न पूजनं ॥ ॐ क्रीं ह्रीं क्रीं अग्नि वक्क कामगी यालय श्री
मिशी भानन्द नाभ लि क श्री मन्त्रा दवा नूड स भक्ति श्री पाइ का पूजया
मिग र्य या मि २ ॥ ॐ क्रीं ह्रीं क्रीं सूर्य वक्क यालं धन पा १० श्री पाछी भानन्द ना

कृत्तुलनी स॥ खड्ग स॥ मन्तुल स॥ कृत्तुल स॥ पाहं देव॥ माहापात्रा॥ **ॐ** क ह २ महा
पात्रु र द्वा त्रिकाय पात्रा॥ शिखः वसि॥ **मिखासकन्द**॥ **ॐ** क ह २ मिखासकन्द
महारु त्रवाय पात्रा॥ शिखः वसि॥ ॥ **गंगा कालि**॥ **ॐ** **ॐ** सिद्धि कलासी **ॐ**
ॐ **ॐ** **ॐ** नामः साहा॥ शिखः ॥ **मयरा**॥ **ॐ** कालरात्रि विमल काल संकर्ष
ना धाम हर मन्त्रा कालिप्रवाद यात्र॥ ॥ **पंचका** **ॐ** ज्यम नात्र॥ त्रिभुवाः
या उचं हास **ॐ**॥ हृदि॥ उचं हास **ॐ** विभयाल॥ हृदि॥ उचं हास **ॐ** या

लम्बत्री ॥ संहारा ॥ यालम्बत्री ॥ **ॐ** महाबल ॥ श्रुना ॥ **ॐ** महाबल यालम्ब
 त्री ॥ एसा ॥ पंचकाली ॥ एवं पुनि गनः सकीय २ मनुन पंचधम गयलं ॥
 परिवात्र पूजा ॥ **ॐ** हुं ह्रीं क्लीं हुं हुं ॥ अमिगार्भ वपाद ॥ छिध ॥ **ॐ** क्लीं हुं क्लीं
 हुं क्लीं वात्र अमम नायनम ॥ **ॐ** क्लीं हुं क्लीं हुं क्लीं वरह अमम नाय २ ॥ **ॐ** क्लीं हुं
 क्लीं हुं कालद वु अमम नाय २ ॥ **ॐ** क्लीं हुं क्लीं हुं कालपा अमम नाय २ ॥ **ॐ** क्लीं हुं
 क्लीं हुं लक्ष्मी वन अमम नाय २ ॥ **ॐ** क्लीं हुं क्लीं हुं ५ माकूल अमम नाय २ ॥ **ॐ** क्लीं हुं

कुंइं श्रीपण्णममनाय॥ **कुंइं** कुंइं कुंइं रावाममनाय॥ ॥ **ध्यान**

॥ कलिंगो लो दयमवः मंगमनालकहेनवां वगालं काकवैश्वरः लिङ्ग

वायुममनक॥ **ॐ** निममनध्यान॥ ॥ वामनपूष्यभुदिकन

नगप्यप्रिया॥ ॥ दक्षिणनज्जनपूजय॥ **कुंइं** कुंइं कुंइं श्रीमहामनुज

प्रिनी कालिअम्यावादकुंइं नमः॥ **कुंइं** कुंइं कुंइं श्रीमहामनुधूषाकालि१०॥

कुंइं कुंइं कुंइं श्रीमहामनुकालिनीकालि८॥ **कुंइं** कुंइं कुंइं श्रीमहामनुगन्धमि

नी कालिः ॥ ॐ कूं भूं हूं श्रीं महागगनधारी कालिः ॥ ॐ कूं भूं हूं श्रीं महाम
नुमाया कालिः ॥ ॐ कूं भूं श्रीं महामनुनिर्या कालिः ॥ ॐ कूं भूं श्रीं महाम
नुनान्दिनी कालिः ॥ ॐ कूं भूं हूं श्रीं भियानन्दिनी कालिः ॥ ॐ कूं भूं हूं श्रीं
महामनुसुरगमनान्दिनी कालिः ॥ ॐ कूं भूं हूं श्रीं महामनुपूजानान्दिनी
कालिः ॥ ॐ कूं भूं हूं श्रीं महामनुमहालक्षा कालिः ॥ ॐ कूं भूं श्रीं हूं
महामनुभूजामलीखी कालिः ॥ ॐ कूं भूं श्रीं हूं महामनुसर्वगम कालिः ॥

ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु विद्याकाति ॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु मीनकाकाति
॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु अमरा अमराकाति ॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु च
दिना अमराकाति ॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु अन्न त्रिककाति ॥ ॐ कुं प्रूं
आं हूं महामनु सिद्धियागि निकाति ॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु भक्ताकाति
॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु मानदिनाकाति ॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु वि
द्याकाति ॥ ॐ कुं प्रूं आं हूं महामनु विद्याधरीकाति २ अमरापाद ॥ ॐ मिश्रला

गपूर्वदात्रयपूजा॥

॥ मूत्रुपाकात्रयश्रावणपादात्रय॥ **ॐ श्रीं** महासू

खसूत्रिकात्रि२ अम्बापादा॥ **ॐ श्रीं** महाभालसूत्रि८ ॥ **ॐ श्रीं** महासूर्यसू

त्रि८ ॥ **ॐ श्रीं** सामसिंहसूत्रि८ ॥ **ॐ श्रीं** महानन्दसूत्रि८ ॥ **ॐ श्रीं** महाप

रसूत्रि८ ॥ **ॐ श्रीं** मरुगसूत्रि८ ॥ **ॐ श्रीं** महाजीवसूत्रि८ ॥ ३ महाश्रद्धिं

वासूत्रि८ ॥ ३ महाकेशसूत्रि८ ॥ ३ महालीलसुहृत्सूत्रि८ ॥ ३ महामनु

लसूत्रि८ ॥ ३ महागायकीवावसूत्रि८ ॥ ३ महानासवीसूत्रि८ ॥ ३ महाभक्त

महा ४

मूहि ८ ॥ **ॐ श्रीं** महासहस्रमूहि ८ ॥ ३ महातावमूहि ८ ॥ ३ महाराषभमू
हि ८ ॥ ३ महाशक्तिमूहि ८ ॥ ३ महागत्वमूहि ८ ॥ ३ महावीरमूहि ८ ॥ ३
महाकालनवामूहि ८ ॥ ३ महाज्ञानमूहि ८ ॥ ३ महाद्योतमूहि ८ ॥ ३ महा
शक्तमूहि ८ ॥ ३ महाताकसीमूहि ८ ॥ ॥ अद्वैतनपक्रियको ॥
॥ **ॐ श्रीं** महाशामवामेश्वरी अम्बापाद ॥ ३ महारवचत्री वामेश्वरी ४ ॥
३ महादिव्यत्री वामेश्वरी ४ ॥ ३ महात्मवत्री वामेश्वरी ४ ॥ ३ महारवचत्री

वामभन्त्री ५ ॥ ३ तस्यवन्त्री वामभन्त्री ५ ॥ ३ हंसमणि वामभन्त्री ५ ॥ ३ महाविम
लमणि वामभन्त्री ५ ॥ ३ विष्णुमणि वामभन्त्री ५ ॥ ३ सिंहमणि वामभन्त्री ५ ॥ ३
खड्गमणि वामभन्त्री ५ ॥ ३ वीरवक्रमणि वामभन्त्री ५ ॥ ३ अहीनमणि वामभ
न्त्री ५ ॥ ३ अहिनामणि वामभन्त्री ५ ॥ ३ महाहरेरवसिंहमणि वामभन्त्री ५ ॥
उरुना ॥ ॥ कुंडां कुंडां आकलनाय श्रीपादा ॥ कुंडां कुंडां इष्टासिनाथप
दा ॥ कुंडां कुंडां वामस ५ ॥ कुंडां कुंडां वामिष्ठ ५ ॥ कुंडां कुंडां अथ क
५ ॥ कुंडां कुंडां दसकधन ५ ॥ कुंडां कुंडां मान ५ ॥ कुंडां कुंडां हय

श्रीव ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं गह्वानिन्द ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं हडालो नमः ५ ॥ **ॐ** कूं
हूं कूं दूं गगन ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं महद ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं वीम ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं
दूं जयदय ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं खवन ५ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं सिद्धिनाथ श्रीपाद ॥
५ ॥ पूर्व मूषा काल ॥ ॥ **ॐ** कूं कूं कूं कूं दूं हं स श्रीमहाज्ञानसूखसूक्ति
कालि २ श्रीपाद कूं कूं नमः ॥ **ॐ** कूं कूं हं सः महाज्ञानसाम २५ ॥ **ॐ** कूं कूं हं सः श्रीम
हाज्ञान २५ ॥ **ॐ** कूं कूं हं सः श्रीमहाज्ञानशाम २५ ॥ **ॐ** कूं कूं हं सः श्रीमहाज्ञान २५

॥ **ॐ** **कौं** हंसः महाज्ञानसूर्या १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः महाज्ञाननर १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः
महाज्ञानश्रुत १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः श्रीमहाज्ञानः उमाधि १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः श्री
महाज्ञानपरा १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः श्रीमहाज्ञानसनकसि सयहनल १५ ॥ **ॐ**
कौं हंसः श्रीमहाज्ञानपाशुल १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः श्रीमहाज्ञाननानय १५ ॥
ॐ **कौं** हंसः श्रीमहाज्ञानअक्र १५ ॥ **ॐ** **कौं** हंसः श्रीमहाज्ञानसखसहस्र
खकाति १ श्रीमहापादईईनमः ॥ **ॐ** **कौं** हंसः श्रीमहाज्ञानयागकी मूर्ति

कालि१ श्रमापादकं नमः॥

॥ वादः ॥ ॐ कूं कूं श्रीरुद्रमहामला

पुष्पाक्षि २ अम्बापादद्वन्द्वं नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं महासर्वत्री कालि २ ८ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं रुद्र महा उल्का मूर्खी कालि २।८ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं रुद्र महा प्रबु

मूखा कालि २।८ ॥ ॐ हूं कूं औ हूं महा ह्रीं मूखा कालि २।८ ॥ ॐ हूं कूं औ हूं

ॐ महागङ्गासमूची कालि १८ ॥ ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं रुद्रमहादेवाय नमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं रुद्र महाश्रम गाम्मुखी कालि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं रुद्र महाश्रम

हनुमूखी कालि २।८ ॥ **ॐ कूं कूं कूं श्री** रुद्र महामनमि मूखी कालि २।८ ॥ **ॐ**
कूं कूं श्री रुद्र महामनापनमना नमनः कालि २ अम्बायाद कूं कूं नमः ॥ **ॐ**
कि ॥ ॥ अलुदल ॥ ॐ कूं कूं कूं कूं अमि गाङ्ग महारैत्रवायः अक्षक
यागिनी सहिगायत्रकवमिः कालि २ अम्बायाद कूं कूं नमः ॥ **ॐ कूं कूं कूं**
कूं रुद्रैत्रवासनायः अक्षकयागिनीः सहिगायत्रकवमि कालि २।८
॥ **ॐ कूं कूं कूं कूं** वपुर्देत्रवासनायः अक्षकयागिनी सहिगायत्रकवमि

कालि२ अम्बापादद्वन्द्वं नमः॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं काधरं नवा सनाय अस्माक
कथा गिनीः सहिगाय वक्त्रवर्गिकालि२ अम्बापादद्वन्द्वं नमः॥ ॐ क्रीं क्रीं
क्रीं महाउन्मरुतं नवा सनाय अस्माक कथा गिनीः सहिगाय वक्त्रवर्गि
कालि२ अम्बापादद्वन्द्वं २॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं कपालं नवा सनाय अस्माक
कथा गिनीः सहिगाय वक्त्रवर्गि कालि२ अम्बापादद्वन्द्वं २॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
महाराषं नवा सनाय अस्माक कथा गिनीः सहिगाय वक्त्रवर्गिका

ति २ अम्बापादकूडं २ ॥ **कुं कूं कूं कूं** महासंहारहे नवासनायः अस्माक
कया गिनी सहि गायः महासस्त्रावलिः कालि २ अम्बापादकूडं २ ॥ ॥
अस्माक ॥ **कुं कूं कूं कूं** मन्त्रिनी कालि २ अम्बापादकूडं नमः ॥ **कुं कूं कूं कूं**
कुं मद्रा कालि २ । ८ ॥ **कुं कूं कूं कूं** डष्टिनी कालि २ । ८ ॥ **कुं कूं कूं कूं** म
झलीनी कालि २ । ८ ॥ **कुं कूं कूं कूं** मूलिनी कालि २ । ८ ॥ **कुं कूं कूं कूं** अं
मिनी कालि २ । ८ ॥ **कुं कूं कूं कूं** वज्रिनी कालि २ । ८ ॥ **कुं कूं कूं कूं** पाभिनी

कालि २ आद्यापादकृद्वं नमः॥

॥ नवशान्या ॥ हुं हुं हुं हुं ॥ ॐ नमो कालि ॥

मायादद्रुं नमः॥ ॐ ह्रीं सुं ह्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं सुं ह्रीं नमः ॥ ॐ ह्रीं सुं ह्रीं नमः ॥

८॥ हुं हूं खुं डूं सूवर्ण काटिका लि २। ८॥ हुं हूं खुं डूं नाडनाऊ भनी कालि

२।८ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ सिद्धिपद्मा. कालि २।८ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ गुह्यकृष्णा. कालि २।८

॥ ॐ हूं खूं डूं वज्रकालि २।८ ॥ ॐ हूं खूं डूं सूनदनी कालि २ श्रम्यापादकूं डूं

ॐ नमः ॥ ॐ ॥

॥ नवाकृती ॥ खुं महाबनु शागभ्वती ॥ अ॥ ॥

सफदभाकालि॥**कुं**कुं सिद्धिकनालि**कौं**कुं**कुं**कुं**कुं**कुं नमः साहा॥**शि**ध॥
॥**पं**वका॥**पं**वकालि॥**श्रूं**श्रूं हांही महासिद्धिकालि २ अम्बापाद**कुं**कुं २॥**श्रूं**श्रूं
हांही महासिद्धिकालि २ अम्बापाद**कुं**कुं २॥**श्रूं**श्रूं हांही महासंहारकालि २ अ
म्बापाद**कुं**कुं २॥**श्रूं**श्रूं हांही महाअनायाकालि २ अम्बापाद**कुं**कुं २॥**श्रूं**श्रूं हां
हां महासाहाकालि २ अम्बापाद**कुं**कुं २॥
पी॥० अष्टमङ्गलाकालिकाम्बापाद॥**द**कुं॥**कुं**कुं**कौं**कौं धनमहापी॥० कौं मङ्ग

लाकालिकायापाद॥ वाम॥ तुं दुं पूं पूर्ण नित्रिपा १० पूर्ण मङ्गलाकालिकायाः

पाद॥ अय ॥ तुं दुं कौ कामनूपमहापी १० काममङ्गलाकालिकायापाद॥ ॐ ति

॥ ॥ सप्तपूजा॥ तुं कौं कूं कूं कूं महाभक्तनामाय स्वाहा॥ ॥ मूलनयिया ॐ ति

॥ ॥ पूषा ॐ ति॥ तुं अय आगुम्भकालिकाः पूषा ॐ तिमन्त्रस्य ॐ ॥ सदा

मिवमपि ॐ बृहगीकृद ॥ ॐ ॥ मिवमक्रिसमलसनिर्वाणकालिकादेवगाः

कुं वाङ्मं कुं मक्रि ॐ कालकं नियपूजासूत्रनाधिकप्रायश्चित्तु विभुश्चार्थ

[illegible]

मात्रिः वात्राहिः माहन्दिः वाम्पुः महालक्ष्मी सिद्धिलक्ष्मी **ॐ कूं हूं हूं कूं**
कूं नमः॥ श्री हे नविश्यागुक्ष कालिक मायः महा मायः सर्व सिद्धिदद सर्व
संमालगात्राणीः देवी काद कामरूप निवासिनीः अम्भ नर नव प्रियः सम
प्रसः अद्दे गावात्र प्रियः सर्व सिद्धिददः **कूं ३ हूं ३ हूं** कूं **ॐ** नमो ह
गवात्रिगुक्ष कालिका कः सिद्धि हे नवि वाम्पु **कूं ३ हूं ३**
हन २ हूं **कूं ३ हूं ३** कूं **कूं ३ हूं ३** कूं **कूं ३ हूं ३** कूं **कूं ३ हूं ३**

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महावज्रयागभ्यन्तरे पंचगत्यात्मिकस्यैव हि संहारज
नाख्यायासां नित्यः पंचभूतं वा अभ्यन्तः कालिस्यामिन्न
वचकभ्यन्तरे महायागिनीः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गुह्यकालिक
श्रुतिपाललज्जदत्रपूजां वलिंगट्क २ ३ रुद्रसाहा ॥ प्रलसं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वद्रकायद्रुद्रवलिंगट्क २ साहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गट्क २ साहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सखानकगुणासायन ॥ महावलिंगट्क २ सा

हा॥ **कूं कूं कूं** कषां कूल कं य पासाय कूं नमः वलिंगट्ट २ साहा॥ **यां** सर्व
या गिनिहा वलिंगट्ट २ साहा॥ **तुं तुं तुं** नमः सर्वकाल उमत्रयः सर्वया
आपं वचकं थानमः वलिंगट्ट २ साहा॥ मूलसं॥ ॥ मूलसंः साङ्गभयवलि
संहायक॥ **उर्द्ध** वक्रां गुणावादिः विगगनमलः निष्कल हनलवाः पाणास
वानलवा सलिसः पवनया र्थय कूटहि नावा। कूटया। भपपी भदिषूः
वः पत्रकगाः पूष्य धूपादिकेशः प्रीणादयाः सदानः शुह वलि विनायूळि

ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॥ उतङ्ग विष्णादवाः महापुत्रनिर्वाले भवती पापू ॥
पुष्पमूलसं ॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥ उलाकमत्रुत्रुद्रु भयपापू ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ॥ निष्वाले भवतान् ॐ ह्रीं ॐ ॥ नद्यं भवती साकिसहिगाय
सिद्धा ॐ ह्रीं ॐ ॥ कसर्वाधिकान् ॐ ह्रीं ॐ ॥ उपापू ॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥ मिष्टानन्दनाथ
पापू ॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥ निरंजनाय ॐ ह्रीं ॐ ॥ विष्णु निनाकाताय धामह
गन्त्री भूनाः पुष्पादया ॥ वलिथकसं ॥ पूनवलिहायक ॥

तुं कवर्च कूकामत्रपंपूत्रविपूत्रगंगाः कालपी १० जयन्त्या खट्वा १५ म १५
पी १० विपथगमिद्रुगाः द विसद्रा कृतात्रा। आवाय १५ सिद्धि संघ १५ पत्रि
वगवतुष्यदि रियागवन्देः शुक्लाहंपंरकाद्यः उत्रकसहसादवदवी
त्रमामि॥ गूंसांपूजां वसिं गट्क २ खाहा॥ ॥ अऊनादिः समयः चतुष
दि यानिः यऊना ऊसः माहा वसि ॥ उड्ड वऊ पुगंः वसि हायक ॥
॥ त्याक महा वसि न धूनक ॥ ॥ आवाङ्क ॥ धनूः यानिः मंखः यद्मः

नकुनीः विहृताः कलङ्किनीः इँ महायानिः इँ ललिहाः इँ महाललि
हाः वनः अणयः मूडा ॥ ॥ कौमालिपूजा ॥ कँ अम्रायदुट ॥ कौ रुद
यायनमः ॥ कँ भितरभस्यास ॥ इँ भिरायवीषट ॥ कँ कवयायद्रु ॥ कौ
नेयुणयायवषट ॥ इँ अम्रायदुट ॥ ॥ कौ अंशुलकायनमः ॥ कौ म
ऊँ न्यायस्याहा ॥ इँ मरधमायवीषट ॥ कँ अलभिकायद्रु ॥ कौ कनिष्ठका
यवषट ॥ इँ अम्रायदुट ॥ ॥ कौ मयूनाहाय ॥ ॥ अना ॥ महामयूनामा

दूदाः नरुव नं वशु हजा । स ह्याक विन्दु मूडावः ॥ यत्की मात्रियुद्धका
 ॥ अनपूर्यन्म ४ ॥ प्रिद्वः यान्निः वासुधुः रुष्टः नदिः महाकाल ॥ मूल्य
 न पिभ ॥ वैकुण्ठं कुरुं मे कुं कांकां कुं को श्री को मान्री का विश्वपाद्कां ॥
 षडङ्ग ॥ बलि ॥ साक्षया ॥ इमा ॥ आदिन पूजा ॥ दाक्षायामनुन पूजा
 बलि ॥ श्रावाङ्गा ॥ प्रिभिषाः यानिमूडा ॥ गूमि ॥ ॥ आप १० ॥ शुक्र ॥ क्रौ
 खाहा १० ॥ हंसीनी पूर्वा चिकानीः अन्ननगवनिपुरा. कालनायिरहवाना।

त्रिपुत्रिकुट्टिकाख्याः नवनवनकधिया हिडिलक्ष्मीपताम्बा ॥ हासानाका
 पताकः त्रिपुवनजननीः नाऊनाऊन्धनीत्वं । ३ कासानकनूपाः पुनममि
 हाऊनः नोमिदवीकूमात्री ॥ अयुगंधपूजाविधनः गत्सर्वविधिपुत्रिपूर्
 ममु ॥ निर्वा ॥ ॐ ॥ ॥ गंगावलिप्रदानं ॥ ॐ नमः ॥ आवनिकाय ॥ अऊन
 ॥ अपकूमः ॥ ॐ आवातगार्थवकः ॥ ॐ भूमूर्तिउत्कलउत्मा ॥ पुत्रिपूमर्दनी
 ॥ समूक ॥ ॐ फकायः ॥ ॐ लापादेकदंष्टक ॥ ॐ त्रावकम् ॥ ॐ आम्बः ॐ षधाम्

रुथपयत्र। अरुका अर्थवाङ्मयः कमलाभ्य वलानना॥ लभसूखल्येवचन
त्रः इन्नेनं अर्थपुधमत्रकं। कृणागापङ्गिवालाः मंकात्रानाहमंभत्रं॥ कृपानि
नयभ्यन्यः अनूवर्द्धय तानूकादंदाकः। नगीकान्कः सुतिहभल वित्रल
अ॥ दनुनाधनदंर्ववः नागकः। एवपुवासा॥ रुकात्रानात्रसिंहभ्यः ह
रुटिकामयासूत्रा युग्मनूत्रवलेवः लम्बा वावसनलभ्य॥ मुकपुनुः
षडासास्य। सुनासो रुद्रकलुआ। कृयान्ककनुपंवासः। कृपासलउदाहना

॥ पंचासद्वर्ग मूढात्रः स्नानास्नानाङ्ग पालकाः । सखावर्ग विहिनाम्बुः कृत्
पालउदाहृता ॥ एकलिंगवद्रुंकासः ॥ मममनवहयापहं । महालक्ष्म वन
धात्रः कात्तासूयावनसदा ॥ एकवृत्तवटवाधः पितालवदनीवहम् । ध्य
॥ नावागुहावासः पद्मखनुकतामयता ॥ संगममु त्रिदशानोद्यः पर्वगमू
कलुषा ॥ निर्मृत्रश्रवणेशाहाः निवात्रमनिहृदक ॥ नृपकृत्तधनाध्वः
कुरुवाकषूकावृकं । अत्रलसवनं विद्याः इद्यां नैमधूकलगा ॥ यगुषाधि

महावीर्याः पातयित्वा फिगाङ्गान् गङ्गासदाकालंः वलिपूजा निवदय
न् ॥ वलानगण हूपाताः द्विजाद्या गङ्गा वलिं । त्रिषण्णनूपङ्गीः वखायात्रि
वलिकाङ्गिन ॥ निर्याधि कान्तवलानाः कथादा न्ननङ्गा वर्वना पिङ्गक
मम्यपिङ्गपिङ्गलावना ॥ दद्या कनाल अशूयः कपाताहनना कना ॥
कास्मिन्नवपुग्रीखन्दः मगमनामीनरुगुर्ध ॥ पूष्यवर्धुलुथ अङ्गः दार्पधूपे
अगुर्धुले । शाविगात्मविनाशः कर्मपूजापत्रायने ॥ अङ्ग वाशः अङ्ग

नाक्ष

ॐ नमः शिवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ वं ॐ ह्रीं क्लीं श्रीमहायः श्रवणरुद्र रुद्रः

पालकपिलकटाहालहासूत्रः त्रिनेत्रकालामूर्खाः गन्धपूष्यवसिपूजांग
क२ ह२ नववर्षपनः पुत्र२ मूत्र२ ख२ ल२ डै२ ह३ महाजामनाधायकः क्रम
सवत्रदाममस्याहा॥ मनुनामनः सर्वेषां विधिवद्भुतिदानगानद्रहि
कंरुवगुः नापसर्गमदिकंरुयं निरुयं प्रमादिगात्राडासर्वेषां वन्त्रहाह
वर्ग॥ ग्राप्तिगंलहगकामानुः संग्रामवक्रयत्सदा। अऊनादिऊप्रपात्रा

यः वलिंगटङ्क २ स्यात् ॥ ॐ मिञ्जुनादिवाति ॥ ॥ ॐ ॥ सर्वपा ॥ भयपा
भनीः छात्रावधानमववा कृशापकृशसंदाहाः सर्वदिग्गगासंलिङ्गा ॥
योगिनी योगवीर्याः सर्वगुणः समागगा ॥ ॐ दूर्ध्वमहावकृतीना
॥ ५ ॥ वनदाममयै ह ह्यासा^सनदवीः गुनूवदावन्नत्रगा ॥ सर्वसिद्धिप्रसा
दामदवीः कषां हवत्सदा ॥ वीत्रानां योगिनीः नां वः यद्विषाकिमाहिमत्र
॥ कषाजान्कमसिंदवीः समयावात्रलववत् ॥ ॐ मिह मिमनपूद्विः मां

सामदाहिकी विमं॥ निरुगं यमुद्रुहानाः यागिनागलसंकुला । रुद्रका
निरुस्रपानिः इन्नीर्मिरुहानुगपिगा॥ तुं कानादिषूयपी धः उयसात्राय
किर्तिगा उोखधी अगुसंदाहाः दिभसुविहिभसुव॥ महिपागत्रउभाः
पुः सर्वस्नानाकत्रवृवा यागिना यागयूकात्माः सफमिरुगुसाधका॥
वीत्रकर्मसूवात्रनुः सयमिषुनुसाधका॥ सिद्धाभयपूकावार्यः साधका
क्रिमिसायिना॥ नगत्रवाथयममवाः जूटयासाभत्राद्धये । वापीकूपीयव

ऊवाः अममनामाहमभुत्र ॥ नानानूपधना नायिः वटका विविधनिव ।
नयि सर्वयि संकुशाः वलिंगटक्रु सर्वदा ॥ सत्रभगनाहं सर्वेषांः सर्वभक्त
रुत्तपुदं । प्रयत्नयं मया आनंः कत्रिष्यामि वयत्कृतं ॥ वलिपूष्यप्रदाः
ननः संकुशाममविक्तका । सर्वकर्म्मनि सिद्धिनुः सर्वदा वयम्भक्तयः ॥ मि
वमक्रियुष्यादनः श्रीकृकालानामाभ्यहं ॥ ॐ निस्रयवलि ॥ ॥ कवर्च
कृकामनूपंयादि ॥ ॥ ॐ ऊयावविऊयाल्ये वः ऊयान्निवायनाकिगा ।

नन्दायदाऊया विमाः कंवाले वमकृकामिगा ॥ दिवाया निमदाया निः मि

नन्दारुद्राङ्गया हिमाः कंसाक्षे वरुकाक्षिणा ॥ दिव्यानिमहायानिः सि
द्धियानिगा ॥ लम्बत्रिासाकिनी कालत्राष्टिवः उद्धकभीना साकनी ॥ गङ्गा
धायनाक्षलाः पवनाङ्गा उलामिका एषनाम्ब महानन्दाः कालामूर्खीरु
थेव्या ॥ पिशाचिहलिनी ल्धे वः यङ्गनी पूरुङ्गिगिरुथ ॥ एषरुद्रसर्वसिद्धिः
शुद्धिः ॥ कागथेव्य ॥ द्रुङ्गानी एम्बनी दीर्घाः पूमाङ्गी कलहप्रिया ॥ मान
गाकाकदिद्धिम्बः गथम्बानि पूनागकी ॥ नाङ्गसी धात्रनादं वः नकाङ्गी वि

三

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

方

五、

[illegible]

रुद्र २ लाहा ॥ ॐ पिपशि मरु वां रुद्र आम्नायः ऊरुना ऊरुसवलिसमाफ

॥ ॐ श्रीवक्रावावा ॥ ॐ नमः श्रीवक्रिकाय ॥ ॐ नृदेवी प्रवक्रामिः जी

वत्या ये कर्ममया । नागलाकपूत्रतमः अहिल्लानमहावलं ॥ मयैषां मिः

कर्मविद्याः अमाद्यावलदयिका । गंगदहीत्यामहादेवीः संसातलयनासिनी

॥ ॐ यं विद्यामहादेवीः परमागदह्लिका । कृशावलिसिर्विद्यागाः सर्वः

सिद्धिप्रदायी का ॥ ॐ शास्त्रदिव्यान्त्रिकः दम्भदिगाशुवन । सफपागालम्

व । रुगयी ॥ अपी ॥ अविमममममम ॥ ॐ नमः श्रीवक्रिकाय ॥ ॐ नृदेवी प्रवक्रामिः जी

ह। रुयणी ॥ ७ पा ७ विषमवगुण्य ॥ ७ मलकवाञ्जम ॥ ७ न ॥ ७ हिं ॥ ७ स्त्रीत्रक
वृकउदधिभुरगटः धूमकालावगात्र। कालर्यपूर्वगिर्याः मथवपूत्रवत्र
अठियानप्रधने ॥ ७ जालारखः यागमूरवकूलपतिनगत्रः कामरूपसूरूप।
उकूलमदहासः पदूपगवः लाउद ॥ ७ अउद ॥ ७ ॥ ७ श्रीसत्रपात्रिकातः पभुप
मिनिलयः हसविंधमवत्रेषू। श्रीमाकांवाउद ॥ ७ मरूगयधगित्रीः जाकिना
अकिनीनां ॥ ७ कास्त्रीत्रवान्धद ॥ ७ डावउमलयकः वक्रवाहकूरुग। म्हात्रा

३
 अह कृष्ण के उग्रसि विध कृष्ण सिद्ध कृष्ण हात्र ॥ अमृशाया सिद्धागः हिम
 मित्रि मिश्रतः काश्चिदं प्रयागः सोत्राष्टम धदलः एगुपूत्रनगत्र का
 भक काभूफ वा ॥ कश्चिदं कोटि काश्चिदं लवाः मगधपूत्रवत्र कश्चिदं कश्चिदं सिद्धिः
 वक्राभहं सवाहः हिमत्ररूपटत्रः वाहत्र अंगनाथ ॥ अमृभहमा एव कः
 मूनिगलनिलयः अहत्र वन्दुदल ॥ नामात्र पूषनाथः मित्रिगहित्रगुहः
 वांभूत्र सिंहनाद ॥ वक्राथ हापनादः भिवपूत्रनगत्रः एडकूलकयाथ ॥

मृ २

श्री विष्णुसिंहनाथनामस्तु ॥ श्री विष्णुसिंहनाथनामस्तु ॥ श्री विष्णुसिंहनाथनामस्तु ॥ श्री विष्णुसिंहनाथनामस्तु ॥

श्री विशारि ककु उ पु वत्र मू निगागः ऊ ऊ रू मू वल क्क । वाता न ह्यां विभ सति
 पथ मू निपाथः गुह क्क ल व मा र्त्त ॥ मू कान्क मू क मा लः मलय गि त्रि गु हा उ
 क्क द ल्म पू त वा ॥ ए डा ड मूल क्कानः पु क्क नि पू ल ल यः सिंह क (नू) म म्भं क
 । लि ल्म म्भं थाम म्भः सू त व त्र स प त्रः ग क्क ना र्था क्क नू ॥ योगि न्या म पु क्क म्भ
 वि वि धि वृ ध नू गांः ~~कु~~ मा न त्तांः ^स र्वा ल्हा र्हा लि डा वि वि ध वृ ध नू गांः दि वा
 सि धि न्द द नु ॥ ख ड्गं वा म नु सि धिः पू त व त्र वि भ नः ख ग तिं ला व नं वा । म्भ
 ह्म सि धि

सनादाः उल्लिख्यानीतकः ॥ अत्र सूक्तदयाः विन्दुसूक्तिप्रसक्तः ॥ २ ॥ रुत्का
त्रयन्कीः नृ३ धितवम्भः स्वाद्यमानासनावाः किङ्कायं तासयन्कीः ल५ लग्ना
डावयन्कीपिवन्की ॥ रुप्ताकामाथाद्रुमिभूमत्रगननूगाः विन्दुनाकलिनानां
॥ भस्मान्कसिद्धिदामाः पत्रमयदगदाः वद्धिगानंगमंगम ॥ यागन्नाका लोक
पात्नीः गहपवनयूगाः पार्थिवनान्ययूकाः षष्ठीकाविन्दुयूकाः कूलकम
सत्रगाः मात्रनी कूडुलाख्या ॥ विद्यागत्रुडभक्तिः सर्वदिग्भुवि वः एषन्नी

हउ कालीः कांकां कूं काम नूपाः अकूलकूलगंगाः वैषनी हकयनी ॥ सामंश
कूटिकाया विचटपशुः महावामा दिवां त्वमा घंतामू उम कोलमा ल्मः कूल
क्रमसमर्थः कोलिनी कां कू लखा ॥ आख्यागा वाममा ल्मः पुकटिग निलया
नालिनी विप्रदहा ॥ कुं कात्रमलुलेवाः अकूलकूलमयाः यागिवकपविष्ठा
॥ श्री नारथसकृगममाः एवत्रमू निगलः वरिगा रासमूर्तिः सा देवी लाकमा
ताः भिवसकलमूषाः मारुका श्री नाथवक ॥ श्री कल्लार्यमानाः वउयूग

परिभाः स ॥ निंका विमलमा सा ॥ सामागानिः वरमपि वरुनाः ॥

सहिगाः स० सिंल मिकाखाः पा० ० सापूलयन्तिः चकचकि न कलाः कोल
मान्नादिगाहा ॥ नान्नाश्री कृष्टिकाखाः प्रियधग मियूगाः युक्ता प्रियका
नाः गंदवीनी मिह सूपकटिग नितयाः पंचकाद्यान हिन्नां ॥ अषाविद्या
महाविद्याः प्रिषूलाक पूइन्तहाः यस्य मिष्ट मूरव विद्याः समूकाना यत्संभय
॥ रूगवगालयकाश्चः युद्धका उक्ता कला ॥ विद्या सत्रनामा उन्नः पलायनं
दिक्षु दिक्षु ॥ अन्त्ययक विदूषाश्चः विषलूगाश्च गंदहा ॥ सत्रना न्नासय देवी

सह्यं सह्यं नवान्यथा ॥ मृगयवात्रावतिनामः विशाखायूत्राङ्गिर्गं। कार्गुना
सत्रन्मदेवीः सत्रन्म सर्वसंपदा ॥ लवणा ० कर्मनित्यंः सीराग्यं व श्रियं ऊसा
महायवर्षू सर्वषूः गर्ग्यं लं वलियूर्वकं ॥ कत्रागि साधकायकुः गर्ग्यं सूर्ययव
र्गका। कालिकं कालनूपाः कलिगगनतवालीषनाह ऊयानिः सामित्री कूङ्किः
काम्यापुकटपपुमहाज्ञानदिशाद्यमाद्यं ॥ न्मिमाहावतिसमाय ॥ ॥
वैकुण्ठनवक्तापुखापुः शमिन्नुधितसदाः सिंधू सिंधू प्रवहताः नूना रुषू

वक्तापुः पम्पि सिमापुः पर्वगापुः पम्पि। वक्ता सिंधूना रुषू

नक्राकः पञ्चपि सिगमयः पर्वगापूत्रयात्य । वक्रविंदानककात्राः क्रूरक्रम
गिगाः गानुवागिबुकिभम्हाः देवी वक्रविकिषूसयमिगिवद्रकाः वदि
गङ्गापूनातु ॥ उर्द्धवम्हा (नु) गवादि विगगनगलः निक्कल्लरगलसवा
पागासवानल्लवाः सल्लितः यवनयाथायक्रूयलिगावाः कुर्या ॥ ७५ ॥ ७५ ॥ ७५ ॥
दिषूयः पत्ररुगाः पूषधूपादिकेशः प्रागादेवाः सदानः श्रुवसि विनापूजि
गासनुनिशुः ॥ मांपूजावसिं गट्क २ सहा ॥ ॥ मूलतया वसिह ॥ ॥ साध

सिंभ सर्वश्रुतिवति पितृगणः वसिष्ठाङ्गद्वयं ममभक्ति कामं सां वसि
पूजाङ्गद्वयं क्रूरं क्रूरं क्रूरं रुद्र साहा ॥ वासुन सह ॥ अगवति हायका ॥ आ
वाङ्का ॥ साकमहावति ॥ मूजा ॥ ॥ ज्ञाप ॥ **शिव वया १० ॥ या गिनी १० ॥**
पाद्रकाया ॥ **कुं** साहा १० ॥ **कुं** साहा १० ॥ वाताही ॥ **कुं** साहा १० ॥ पश्चिमा ॥
कुं साहा १० ॥ **कुं** साहा १० ॥ समरुभन **कुं** साहा १० ॥ ॥ रगवति **कुं** साहा
॥ लक्ष्मीया **ववा कृता १० ॥** मूलषादभ कृता १० ॥ पूर्व **कुं** साहा **कुं** सा

हा १० ॥ उड्डयाषाउअ कृती १० ॥ निर्वाण १० ॥ मूलनन्यासा ॥ पूर्वया १० ॥
उरुतया १० ॥ पश्चिमया १० ॥ निर्वाण १० ॥ अरुणकलनकयसंक
ल्प ॥ गुह्यागिगुह्यागमकुलः गृहा ॥ सत्कनंकपं ॥ सिद्धिरुवगुमद
वीः लल्यसादान्महम्भती ॥ ॐ दंकपंगृहानसाहा ॥ ॥ मूलनन्या
न ॥ ॥ मधुलवाया ॥ ॐ अरुणमधुलाकालं व्यापनंकनवत्रावत्रं ॥ ग
रुलंदभिर्नंकनगसं आगुत्रुथं नमः ॥ गुत्रुवक्रायादि ॥ श्रीमहादेवः

ॐ वाय॥ श्री देवी वाय॥ श्री सप्त काम भुलान्न कामपद निहिताः न क्रम
किं हारी माः ॥ द्वि न्याय यतु कं ल कूल कूल गगनः पं श्र कं वा न्य व द्दं
। वलातः पं श्र को न्यः पुनत्र पि यतु त्रः ॥ पात म्भ झा रि ख काः दे वा ह्यो म्
हि म्भः हस धरु ल कला वि न्द्र पू ष्या क्र मू डा ॥ दृ ड् को मा त्र वा लः ए थ म
मि व कलाः वक्र दे वी क मा न्याः श्री नाथं व न्द्र पू ष्या न व न व क लि नः यू ग म
हृ द पि सा त्रं । पि न लं सि डा व गा त्रः ए थ म क लि यू ण का ङ्क ॥ अ स्था धि का लं

ॐ सां वे या म मि षा न रा य रा य रे ॥ ॐ सा म ॥ वि न लं ॥ ॐ सा नं ॥ ॐ सा नं ॥

कषांवेयूपमिषानवयूपरूपदःकषूसरध्वद्विद्वो॥सकानंलमपिभुं
कृतकमसकलःषाउअकाकमानंःश्रद्धामनुलाद्यपत्रिन्नमविमत्रं
पूश्चसहावद्वन्द॥श्रादावलादअनंःकृतकमसकलःमनुलंलानपूर्व
सकानंयिकमनःपभुऊनरयकस्यनुसिद्धिःमिवात्मे॥मरध्वविअम
हमिंयनवमनूरयःप्रययंसाधिकात्रं॥संभृयनगमिनामनिगुनूवत्रं
रैत्रवंश्रीकुरुसा॥ ॥३॥यासाभक्तिरगमस्यापिपथगनियूगमशुक्रना

पिप्रकाशा। वैगस्या श्रीअठियानः पत्रकलसदिनः मध्यसंस्कृतदापं । ऊँ
नकुं जातन्धतायः एकदिननितयः कृत्तिनेल्लेवकालः श्रीवामश्रीपूर्न
नित्रिणी ॥ ० पञ्चजनरूपकल्पत्रिगंजनविभं ॥ ऊँ गस्या एकामरूपः मदनः
कनयूगंः सर्वसिद्धातयश्चः ऊँ शिकान्नकसमकः पत्रमभिवकलालंकुगं
यागविन्दं । ऊँ गन्म ॥ ५ दिवालिङ्गः पत्रमभिवकत्रं विन्दूयखरूपं ॥ ऊँ नि
शानन्दसरूपः गद्रपत्रिमथनाषट्प्रकात्रनविन्दुं ॥ हं विशालोत्तमपगमं

श्रुतं हवविमलंः श्रुतं ॥ १० ॥ ललाटे ॥ ॐ ॥ अथापं समस्तंः ह्रि गिलयजननीं
उभक्रिमु ॥ ११ ॥ ॐ गणेशदेवदेवीः श्रुतं कृतकृतमयाः नन्दधामिहगन्ता
। कुंगुर्वाज्ञा विन्दुत्तापशुजनहरनीः सिद्धिदिवा यत्रूपा ॥ १२ ॥ ॐ निर्याद्रिं ना
स्रक्तारगामूदिनपदाः नन्ददापिप्रसिद्धाः ॥ १३ ॥ ॐ कूर्वन्निगप्रकामान्निखिल
गवगन्तुं श्रीकृष्णकारुण्यमाप्ति ॥ १४ ॥ ॐ हिसकानसूत ॥ ॥ सकानं मेतुमात्मेन
श्रुत्ययं गणदेवता ॥ दार्गमः ॥ १० ॥ मां कात्र सिद्धान्वयप्रकारिणा ॥ १५ ॥ ॐ ॥

मिगुहावाभाः वृषाश्चैव कृतमकथं ॥ संकमसहिगं प्राकः अम्बावगुहवा
सिनी ॥ गुहं वन्द्य पूजयाकः रुद्रामकानरैरव ॥ लम्पु अमसिकादेवीः वा
ममाग्नैकत्वाय ॥ अन्वयं पुराय अत्रः माधि कात्रमुकाद ॥ ५ ॥ क
र्मवक्त्रमिलाहानः हिमिश्च कामरूपक ॥ किर्तिर्विश्चिनिवृत्तुः
सिद्धिर्धैवगुहागत्र ॥ गुहं गस्यादेवभिः याज्ञानागिकुलाक्रमं ॥ ६ ॥
उम्मा अत्ररुदनः न्यासं वक्तुमकथं ॥ पूजितं सिद्धिदं इदं शुभिख्याय

मिगुहावाभाः वृषाश्चैव कृतमकथं ॥

मिवदयन् ॥ ॐ मिमिक्षु ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ नमो भगवते

हामायः सुश्रद्धा पत्राय नमः ॥ काकिली विशुद्धात्माः नादारवा विन्दुमा
सिना ॥ अदहाय समस्तानेः अवलं विम्वध त्रिली ॥ महाकृपुलनी निः
यः हंसम ॥ अवास्तिग ॥ सामसूर्या निमधः वामवापी पत्राय न
॥ ॐ कात्रवियहा वरुः हकात्रा हार्दध त्रिली ॥ वात्साय भगध भूः
अनर्क वाक्य वाय ॥ हकात्रा द्वकलान्कः पद्म किं कल्मा शिग

॥ सकलार्थ महासायः वनदला कपू किं । एकै कनातिमथरुः
मम्ममि के कहदिनी ॥ अरु यिंमलला देवीः र्हे दिनी वरुन न्युके ।
लकुनु वरुना वेदाः लकुं रात्रगमूया ॥ लकुं मयस्य मसुस्यः य
उत्रकुनु क्षाणिषा । विष्णुत्तगानिहा देवीः उरुम कूटिला कनि ॥
उरुमा विष्णु मरुतः ॐ मरुत सदा भिवा ॥ एत पश्च महापुंगः
पादमूल वरुहिना ॥ र्हे ला सुकननी देवी नमस्तु अकिन्नू यिनी ॥

ॐ आपिङ्गलमधुःरं ललङ्गुनूपिनी। विन्दुमधुगगादवाः कूटि
लेखाद्वाङ्मुकं॥ गुखात्रकलिकारासः वादमकावलं विनी। उमाख्यद
ङ्गालम्बेत्रीः वादमदिश्वरवर्ष॥ सूत्रसूत्रगलाललः हंसाख्यप्रानध
नीनी॥ लम्बाख्यपत्रमादवाः दक्षिणमङ्गुलममिनी॥ नाम्मात्रपुत्रसूत्र
मधुसूत्रपुत्रवाहिनी। हन्त्रख्यपत्रमानन्दः गालसूत्रिव्यवलिङ्गा॥
नादघान्तिकसंघर्षः गुल्लकसमन्विता। सुलसूत्रसंघर्षः ध

आधर्मपूटदय॥ कार्यकान्तलकरुलः शिसूनोनादविग्रह। पत्रा
पत्रकत्रभुङ्कः रैगन्यसाभनधुवे॥ सर्ववल्लधनादवाः गुङ्गागल्लपि
विभुग॥ ॥ भक्तिमूलमहावीरुः विन्दुवाङ्गसमन्विग। जूभत्रात्रम
हामायः संसात्रान्नवगात्रली॥ ऊयावविऊयाववः ऊयक्रियापत्राङ्गिगा
। उम्पूतूवीऊमाधुलः नमलुपायमावनी॥ वन्धमाऊकनादवाः षाउ
भक्तव्यवहिरगात्रमनी भक्तिमूलनहाशूहसमन्विग। अमलीगोत्रीमा

शः यन्त्रुयवाहिली। स कन्दर्पदेवता का धवा नमः कन्दर्पदेवता॥ पञ्चमवर्ण
रूपस्मात् स्वयात्तुडां यकिर्दिगा॥ अमृताख्यत्रुम्भः नमः कापालिना मि
वा॥ त्रुत्तुदिना महामायः नमः कन्दर्पदेवता। दद्यात्कटविद्युक्किङ्कः गालः
काकिरुथानन॥ नमामि देवदेवभिः अथात्रथात्ररूपिनि। कालामूर्खी वग
वग उमादेवी नमामुग। शालाभी वशिष्ठादेवीः लम्बालम्बाः सत्रसग्री॥ हंस
सत्राङ्गदेवीः लम्बामूर्खी अकिमासिनी। काष्टुका सत्रगम्भदेवीः दुर्गकाया

यनीमिवा॥विष्णुकिन्नासमाख्यागाःत्रकार्वेकाङ्कनापत्रा।षाङ्गीमाहभ्रना
वेवःकोमात्रीवेष्टुवीमथ॥वाताहीवेवमाहन्डीवाम्रुअलंरयानना।योः
लम्भीलंहिदेवमिःकृत्वाष्टकसमन्विता॥श्रुष्टाष्टकधनादेवीःलम्भीःलं
वक्रुपिनी।वेन्डीवेवपुत्रायेयाःयाम्भानेअयवात्रुली॥वायवांवेवना
वेअनासमूदाहुगा।पुयागावत्रुल्लकोलाःश्रुदहाहाऊयनिका॥यत्रिष्टेक
मुकवेवःदेवीकादंपुवावथ॥श्रुसिगांल्लत्रुअपुक्राउन्नरुहेत्रवठ॥

कालीहायलावेवःसंहारश्चिववास्तुध ॥ गथ कालाउमादेवीःदवद्रुगी
नामास्तुत ॥ एडकालीमहादेवीःवर्ममू(पु)रुषावह ॥ महाकूक्षमहाभक्तः
नमस्तुभक्तिरूपिणी ॥ एडकूवःसगिलाहान्तःदयाना(प)कूत्रुषम ॥ ज्ञानाधि
नामहामायःअगदिक्तामिवदिगुं ॥ याह्वगुंय अगकुण्डितिसंधवेवमान
व ॥ प्राप्तागिविनिगान्कामान्कुनामूवगिवन्तव ॥ वगुर्ध्वगुदामनु
वगुताकनसंरुका ॥ गदिगंहेतवंमनुःसाहामायानमास्तुत ॥ ॐ गिकूला

हिकाभाय श्री मत्स्य द्विकामः गङ्गाग्रह पूजा विधि पवित्राह नवगु
र्विभक्तिमा पटत्रभिर्वक्त्र किं समस्तत्वं महामाया मुकुटं समाक ॥ ॥
वन्दे सदा सकल कौलिक सा लक्षणः कर्णध्वजं नत्र कणात्रः कंठ म्भमा
तां । खडाङ्ग खड्ग रुटक काश हस्तः धात्र ह्मिगं शिशु वन भव वन्त रा
या ॥ पिङ्ग क्रीत्र कर्कभं किनि कि नि स वत्रः किं किनी माल जालं । दष्टा
स्यं कूत्र लावः सकल विष हनः पाञ्चरु लं उनादं ॥ स्रव्य कू सिंह नादं

[illegible]

[illegible]

कमदिगान्तारि॥ वनिः॥ मया॥ मयाः सावित्रमयाः विद्याकर्षात् ॥ २४

स्वस्ति गाम्भूलादि ॥ वसिष्ठः ॥ अथ अथः सावित्रि अथः निर्यकर्म धक ॥ ५
मिसूथया कर्म ॥ ॥ पूनसिद्धां च न पूजाः धूपदापनं वादः ॥ वाका
या ॥ ॥ इडाने पागासनवायः पूजा ॥ लिखकुरुजासाः स्वयंपंश्वरी
नय ॥ कुरुकुरुकुरुजासा वंसिकासकगुरुकपंवरी ॥ ॥ पिगल ॥ पुत्र
नामस्कात् ॥ न्यास अथ पूजा उथं याया ॥ ॥ संकर्यः मासन ऊपवपुर्द
मि पार्थन्यानि सिद्धा सास्तु देवताः पञ्च उपवात्र पूजा निमित्तार्थनः कुरु

मूर्ध्नि पूजा ॥ ॥ वाग्वराजमगवियमम्यास ॥ ॥

सम्यक् ५५२ हार्गुनमु १२ संपूर्ण लिखितं कर्माचार्य राजसूडा ब्रह्मडावा

कम्यागां पुमभ्यत्राः अविद्याया ० शा मित्रमुमुह ॥ ॥

नैमर्ती ॥ ॥ कायेन वाचा मनसा च कर्मना बुद्ध्यात्मना वा प्रवृत्तिस्वभावात् ॥ करे
मिजे ज्ञात्सकलं च तस्मै श्रीगुप्ते काली समर्पयामि ॥ १ ॥ नान्यं वदामि न शीनोमि न
चिन्तयामि नान्येस्म शमि न भजामि न च श्रयामि न कृत्या तोदियं चरनाम्बुजमादरे
ण मात्रा हि भुजक्तप्रणामयिदेहि मिद्धि ॥ २ ॥ अज्ञानाद्वा पुमानाद्वा वक्तव्या साधक
म्यच जन्मनमिति रिक्तवा तत्सर्वक्षेत्रमस्मि ॥ ३ ॥ द्रव्यहीनं कीर्याहि न श्रद्धामंत्रविर्व

किं ॥ त्वार्त्तं कदापि न क्षेममवन्तं दयानिधे ॥ ४ ॥ जन्मया कीर्येते कर्म जपान्मप

र्जितः ॥ तत्सर्वं कृपया देवी क्षेमस्वत्वं दयानिधे ॥ ४१ ॥ जन्मया किये ते कर्म जगत्स्वप्न
सुषुप्तिषु ॥ तत्सर्वं जावकी पूजा भुया भुज्ये तमे शिवे ॥ ५ ॥ जन्मया किये ते कर्म तन्मू
त्स्वल्पमेव वा ॥ तत्सर्वं च जगद्धात्री क्षेतवां मय मंजली ॥ ६ ॥ पदमानन्दसंदोहः प्रभा
दभरणी भरे ॥ दुःखत्रयं परिस्तान वदनं चाहि मां शिवे ॥ ७ ॥ सद्यस्त्वस्मै मये स्तुतं देवी
आगुह्ये काली के जथा सक्तजपपूजा गृहान मदनगुह्यत ॥ ८ ॥ अज्ञानादल्प बुद्धिर्त्वा दा
तस्मां दुष्टभावतः ॥ कृपापराधं कृपनं क्षेतुमहं मिमेशिवे ॥ ९ ॥ अज्ञानेनापराधेन लो
भेन कवचेन वा ॥ तव तुल्यसिद्धदेवि भवानिभयनासिनी ॥ १० ॥ आवाहनं न जानामि न ध्या
ने न च पूजने ॥ तिसर्जनं न जानामी क्षमश्च परमेश्वरि ॥ ११ ॥ अपराधं सह आमीकृत्य ते रु
र्तिसंभया ॥ दासोहं मिति मां मत्वा क्षमश्च परमेश्वर ॥ १२ ॥ अनेन सरशां नास्ति त्वमेव मारशां

ममः तस्मात् कारुण्येनां रक्षे रक्षामां परमेश्वरि ॥१९३॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

